राष्ट्रीय आपदाओं के समय श्री गुरुजी का मार्गदर्शन

लेखक
डॉ. कृष्ण कुमार बवेजा

राष्ट्रीय आपदाओं के समय श्री गुरुजी का मार्गदर्शन

लेखक
डॉ. कृष्ण कुमार बवेजा

प्रवेश

कोलकाता से प्रकाशित दैनिक 'आजकल' के ६ जून, १९९१ के अंक में निष्ठावान कम्युनिस्ट बुद्धिजीवी और पश्चिम बंगाल सरकार के पूर्व वित्तमंत्री डॉ. अशोक मित्र ने ''गाय की कहानी–गुरु की कहानी'' शीर्षक से एक लेख में गोहत्याबंदी आंदोलन का उल्लेख किया है। ७ नवम्बर, १९६६ को संसद मार्ग पर हुए गोभक्तों के हत्याकाण्ड के बाद सरकार ने एक समिति का गठन किया था। इस समिति में पुरी के जगद्गुरु शंकराचार्य, डॉ. श्यामा प्रसाद मुखर्जी के ज्येष्ठ भ्राता न्यायमूर्ति रमा प्रसाद मुखर्जी और श्री गुरुजी को विशेष रूप से शामिल किया गया था। यह उल्लेख करते हुए डॉ. अशोक मित्र ने अपने उपरोक्त लेख में लिखा है, ''हमें सबसे अधिक आश्चर्य में डाला श्री गुरुजी ने।

''....उनकी उग्रता के विषय में बहुत सुना था।..... राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के वे प्रतिष्ठा–पुरुष एक साथ ही अंधभक्ति तथा गंभीर आतंक के भी केन्द्र बिन्दु थे। किन्तु मेरी धारणाएँ गलत निकलीं। मैंने पाया कि श्री गुरुजी आवश्यकता से अधिक नहीं बोलते थे। यदि किसी के विचार और अभिव्यक्ति उन्हें पसंद नहीं होते थे तो भी उसके प्रति उनके व्यवहार में कोई अंतर नहीं पड़ता था। वे भारतवर्ष की प्रायः सभी भाषाएँ जानते थे। मेरे साथ वे बँगला भाषा में बोलना पसंद करते थे। उनके विषय में मेरी धारणा 'विषवत्' थी, किन्तु उनकी विनम्रता और सौजन्यता ने मेरी सभी पूर्वधारणाओं को संदेह में डाल दिया।..... उक्त समिति की बैठक में भाग लेने वे जितनी बार आए मुझे कभी उग्र दिखाई नहीं दिए। इसे स्वीकार करने में मुझे कोई हिचक नहीं है कि उनके व्यवहार ने मुझे मुग्ध कर लिया था। .....तब संभवतः मुझे यह कल्पना नहीं थी कि उनसे मुझे अभी और भी मोहित होना पड़ेगा।

''.....उपरोक्त समिति के भंग होने के लगभग एक वर्ष बाद एक संध्या समय नई दिल्ली रेलवे स्टेशन से दक्षिण एक्सप्रेस या किसी अन्य ट्रेन द्वारा मैं संभवतः भोपाल जा रहा था। दो शायिकाओं वाले कूपे की एक शायिका पर मैं बैठा था। थोड़ी ही देर में दूसरी शायिका के यात्री आए। वे कोई और नहीं अपितु स्वयं श्री गुरुजी थे। उन्हें संभवतः झांसी जाना था। देखते ही उन्होंने मुझे अंक में भर लिया। मेरे स्वास्थ्य के विषय में पूछताछ की। समिति तथा देश की विभिन्न समस्याओं के विषय में कुछ चर्चा की।

''.....वे अत्यंत नम्रता के प्रतीक थे। मैं आयु में उनसे छोटा था। एक ज्येष्ठ भ्राता से जो स्नेह मिल सकता है, मेरे प्रति उनका व्यवहार उससे भी अधिक स्नेहपूर्ण था।

''गाड़ी चल पड़ी। धीरे–धीरे बाहर अंधकार बढ़ने लगा था। बात बन्द हो गई थी। कुछ समय बाद वे अपने ब्रीफ केस से एक पत्रिका निकालकर पढ़ने लगे थे।..... यह मेरे और भी आश्चर्य चकित होने का समय था। सनातन धर्म के उग्र ध्वजाधारी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के प्रधान पुरुष के

संबंध में मेरी धारणा थी कि वे कोई धार्मिक पुस्तक या हिन्दू दर्शन के विषय में कोई जटिल ग्रंथ पढ़ रहे होंगे। किन्तु मेरे आश्चर्य का कोई ठिकाना नहीं रहा जब मैंने देखा कि उनके हाथ की पुस्तक अमरीका के हेनरी मिलर का हाल में ही प्रकाशित उपन्यास था।

''..... बस! शेष स्वयं समझ लें। सत्य छिपाने से क्या लाभ? उस समय श्री गुरुजी के प्रति मेरी श्रद्धा और अधिक बढ़ गई.....।''[१]

डा. अशोक मित्र के इस अनुभव के बाद श्री गुरुजी के बारे में और टिप्पणी या इसका भाष्य करने की कोई आवश्यकता प्रतीत नहीं होती। इन्हीं श्री गुरुजी का 'राष्ट्रीय आपदाओं के समय मार्गदर्शन' इस पुस्तिका में प्रस्तुत करने का एक विनम्र प्रयत्न किया गया है।

१. राष्ट्र, मा.स.गोलवलकर ''श्री गुरुजी'', जानकी प्रकाशन, नई दिल्ली, वि. २०४८ (१९९२ ईसवी) पृष्ठ १२-१३.

आमूलाग्र परिवर्तन

सरसंघचालक बनने के बाद प.पू. गुरुजी ने अपने स्वभाव में योग्य परिवर्तन किया। दिनांक १७ जून १९७३ को नागपुर में श्री गुरुजी की तेरहवीं पर दिए गए श्रद्धांजलि भाषण में तृतीय सरसंघचालक पूजनीय बालासाहब देवरस इस विषय में कहते हैं, ''सरसंघचालक पद का भार ग्रहण करने के बाद अत्यन्त श्रद्धा तथा लगन के साथ वे कार्य में जुट गए। उनके स्वभाव में आमूलाग्र परिवर्तन हो गया। प्रारम्भ में वे क्रोधी स्वभाव के थे, परन्तु संघ कार्य प्रारम्भ करने पर उन्होंने अपना क्रोधी स्वभाव बदल डाला। वे हम लोगों से कहते थे कि यद्यपि वे शीघ्रकोपी हैं तथापि दीर्घद्वेषी नहीं हैं।''[१]

भारत छोड़ो आन्दोलन '१९४२'

प.पू. डाक्टर जी के सूत्र को आगे बढ़ाते हुए श्री गुरुजी ने इस आन्दोलन में स्वयंसेवकों को व्यक्तिशः भाग लेने की छूट दी थी। संघ के स्वयंसेवकों ने कई स्थानों पर सहभाग किया था, पुलिस के डंडे खाए थे, गोलियां झेली थीं, कारावास में भी गए थे। विदर्भ में चिमूर तहसील कचहरी पर तिरंगा फहराते समय पुलिस की गोलियों से छलनी हुआ कार्यकर्ता संघ का स्वयंसेवक ही था।। देशभर में संघ स्वयंसेवकों ने इसी उत्स्फूर्तता से सन १९४२ के आन्दोलन में यथाशक्ति अपना योगदान दिया था।

अरुणा आसफ अली जी का आश्रयस्थल

'बयालीस की बिजली' कहकर जिन अरुणा आसफ अली जी का आन्दोलन की स्वर्णजयन्ती के अवसर पर बड़ा गौरव और सम्मान किया गया, दिल्ली के हिन्दी दैनिक 'हिन्दुस्तान' में अगस्त १९६७ में छपी एक भेंटवार्ता में वे कहती हैं, ''बयालीस के आन्दोलन में जब मैं भूमिगत थी, तब मुझे दिल्ली के प्रांतसंघचालक लाला हंसराज जी ने अपने घर में दस-पन्द्रह दिन आश्रय देकर सुरक्षा का पूरा प्रबन्ध किया था। मेरे उनके यहाँ निवास का पता उन्होंने किसी को नहीं चलने दिया था।'' इसी भेंटवार्ता में अरुणा जी आगे स्पष्ट शब्दों में कहती हैं, ''हमारा आन्दोलन असफल ही रहा। ८ अगस्त की रात में ही कार्यकारिणी के सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया जाएगा, इसकी नेताओं को कोई पूर्वकल्पना नहीं थी। वे तो जेलों में जा बैठे। बाहर हम लोगों का मार्गदर्शन करनेवाला कोई नहीं था। जिसकी जो समझ में आया, उसने वही किया।

१. हिन्दू संगठन और सत्तावादी राजनीति,श्री बालासाहब देवरस, जागृति प्रकाशन, नोएडा,पृष्ठ-१९.

कहीं कोई सूत्रबद्धता थी ही नहीं। हमारे उस आन्दोलन के फलस्वरूप स्वराज्य आया, ऐसा मुझे कतई नहीं लगता।''[१]

'सुविख्यात वेदमूर्ति पं. श्रीपाद दामोदर सातवलेकर जब औंध के संघचालक थे तब उन्होंने 'पत्री सरकार' प्रयोग के जनक क्रांतिवीर भूमिगत नाना पाटील को कई दिनों तक अपने घर में आश्रय दिया था। श्री नाना पाटील के सहयोगी श्री किसनवीर भूमिगत रहकर कार्य करते समय सातारा ज़िले में वाई नामक स्थान पर वहाँ के संघचालक श्री दत्तोपंत गोखले के यहाँ रहे थे। सुप्रसिद्ध समाजवादी नेता श्री अच्युतराव पटवर्धन भूमिगत कार्य की आवश्यकतानुसार अपना मुकाम बदलते हुए भी अनेक संघ स्वयंसेवकों के घरों में ही रहे थे। यही नहीं, संघ से आजीवन उग्र द्वेष रखनेवाले गाँधीवादी श्री साने गुरुजी भी पुणे संघचालक श्री भाऊसाहब देशमुख के घर में गुप्त रूप से रहे थे।''[२]

निर्विवाद देशभक्ति एवं मूल्याधिष्ठित जीवन निष्ठा

सोलापुर कांग्रेस समिति के एक प्रमुख कार्यकर्ता १२ दिसम्बर १९४८ को प्रकाशित अपने निवेदन में कहते हैं, ''सन १९४२ के भारत छोड़ो आन्दोलन में मैं स्वयं सहभागी हुआ था। उन दिनों पूँजीपति और किसान वर्ग सरकार से डरा हुआ था। इसलिए हमें उनके घरों में कभी प्रश्रय नहीं मिलता था। हमें संघ कार्यकर्ताओं के घरों में आश्रय लेते हुए ही भूमिगत कार्य करना पड़ता था। संघ के लोग अत्यन्त हर्ष से भूमिगत रहने में हमारी सहायता करते थे। हमारी सारी आवश्यकताओं की पूर्ति भी किया करते थे। यही नहीं, हममें से कोई बीमार पड़ जाता तो जो संघ स्वयंसेवक डाक्टर थे, हमारा इलाज किया करते थे और जो स्वयंसेवक वकील थे, वे निडर होकर हमारे लिए कानूनी लड़ाई लड़ते थे। इन लोगों की देशभक्ति और मूल्याधिष्ठित जीवन निष्ठा निर्विवाद थी।''[३]

पूर्वानुमान के अनुसार अंग्रेज सरकार ने भीषण दमनचक्र चलाकर दस-पन्द्रह दिनों के अंदर ही आन्दोलन को कुचल डाला। संघ की सीमित शक्ति, आंदोलनकर्ताओं की योजना-विहीनता एवं दिशाशून्यता तथा आन्दोलन में एकसूत्रता की कमी के कारण देशव्यापी संघर्ष के अधिक काल तक न चल पाने की सम्भावना आदि सभी पक्षों का सम्यक् विचार करते हुए संघ को संगठन के नाते इस आन्दोलन मे भाग नहीं

---

१. राष्ट्राय नमः, मो.ग.तपस्वी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ ८५-८६.
२. वही, पृष्ठ-८६.
३. राष्ट्राय नमः, मो.ग.तपस्वी, प्रभात प्रकाशन, दिल्ली, पृष्ठ ८६-८७.

लेना चाहिए, श्री गुरुजी द्वारा लिया गया यह निर्णय समय की कसौटी पर खरा उतरा।

स्वयंस्फूर्त शौर्ययुक्त कर्तव्य-पालन

मराठी पुरुषार्थ मासिक के एक लेख में श्री गुरुजी लिखते हैं, ''सन १९४७ इस तरह बीता कि वह हम सबको अनेक कारणों से स्मरणीय रहेगा। मातृभूमि का अत्यन्त दुःखदायी विभाजन हुआ तथा अनेकानेक बन्धुओं का अमानुष उत्पीड़न हुआ। उन्हें असंख्य यातनाएँ सहनी पड़ीं। जो अपने बन्धुओं की रक्षा करना स्वाभाविक कर्तव्य मानते हैं, वे स्वयंस्फूर्ति से आगे बढ़कर उचित उत्तरदायित्व ग्रहण करते हैं, कर्तव्यपूर्ति के लिए प्राणों की परवाह भी नहीं करते। संघ के स्वयंसेवकों ने यही किया। अलौकिक शौर्य और बुद्धिमत्ता प्रकट कर अनेक परिवारों की रक्षा की। यह सब काम इस प्रकार किया कि सभी लोग उनके प्रति धन्योद्गार व्यक्त करें।

और हुआ भी वैसा। इस सब दौड़धूप के समय, सारी परिस्थिति का निरीक्षण कर स्वयंसेवकों को अधिक उत्साहित करने के लिए मैं अमृतसर में कुछ दिनों के लिए रहा था। काफिलों में मैंने चक्कर लगाया। तब मुझे ऐसे व्यक्ति आकर मिले जो आज बड़े-बड़े पदों पर आसीन हैं। उन्होंने प्रत्यक्ष चरणों पर मत्था टेका और कहा - आपका संघ न होता तो हमारी रक्षा नहीं हो पाती। हमारे बाल-बच्चे, स्त्रियाँ सुरक्षित न रह पाते। सेना के अधिकारी मिले। वे भी आदरपूर्वक स्वयंसेवकों तथा उनके अदम्य साहस का उल्लेख करते और कहते - इन्हें तुमने क्या और कैसी शिक्षा दी? ये इतने साहसी और सूरमा कैसे बने? जो बात हमारी सेना के जवान नहीं कर सके, वह पराक्रम ये लोग कैसे दिखा सके? मैं उन लोगों से कहता - संघ मेरा नहीं, आपका है। स्वयंसेवकों ने केवल अपना कर्तव्य पालन किया है।''[१]

निर्धारित कार्यक्रम के प्रति आग्रह

भूतपूर्व सरकार्यवाह एवं तत्कालीन पंजाब प्रांत प्रचारक श्री माधवराव मुळ्ये सन १९४७ के अपने एक संस्मरण में लिखते हैं, ''सितम्बर मास की बात है। भारत का विभाजन हुआ ही था। सिन्ध और पंजाब के हिन्दुओं पर भीषण विपत्तियाँ आईं थीं। विस्थापित चले आ रहे थे। उनकी दुर्दशा सुनकर श्री गुरुजी पंजाब के दौरे पर आये। ज़ोरदार वर्षा हो रही थी। नदी-नाले उफन रहे थे। प्रवास के क्रम में श्री गुरुजी

१. श्री गुरुजी समग्र, खण्ड ६, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, युगाब्द ५१०६, पृष्ठ ४१-४६.

को जालन्धर का कार्यक्रम सम्पन्न कर लुधियाना जाना था। मार्ग पर पानी भरा होने के कारण, कार द्वारा वहाँ पहुँचना सम्भव नहीं था, किन्तु श्री गुरुजी का आग्रह था कि निर्धारित कार्यक्रमानुसार लुधियाना पहुँचना ही चाहिए।

रेलवे वालों से पूछताछ की तो पता लगा कि एक ट्राली का प्रबन्ध हो जाएगा। श्री गुरुजी के साथ मैं और श्री धर्मवीर जी उस ट्राली पर बैठे। ट्राली ढकेलने वाले बड़ी फुर्ती और सावधानी से लुधियाना की ओर रेल पटरियों पर दौड़ने लगे। फिर भी हम ट्राली से चहेडू तक पहुँचे। चहेडू में एक बड़ा नाला था, जो लबालब भरा था और पानी बहुत तेज़ गति से बह रहा था। बाढ़ के पानी ने चहेडू के रेलवे-पुल का खम्भा बहा दिया था। पुल का ऊपरी भाग (ढाँचा) तो ज्यों-का-त्यों खड़ा था, किन्तु रेल-पटरी के नीचे की भूमि बह जाने से रेल-पटरी स्लीपरों के आधार से झूलते पुल की तरह लटक रही थी। ट्राली वाले ने आगे जाना अस्वीकार कर दिया।

''हम सोचने लगे कि अब क्या किया जाए। कुछ उपाय सूझ नहीं रहा था। हम लोग सोच विचार में उलझे हुए थे कि इतने में हमारे देखते ही देखते श्री गुरुजी ने झूलती हुई उस रेल पटरी और स्लीपरों पर अपने कदम आगे बढ़ा दिए। वे फुर्ती से आगे बढ़ने लगे। हमारे दिल धड़कने लगे। हमें भी साहस करके पीछे चल देना पड़ा। झूलती हुई रेल-पटरियों के दो-तीन फुट नीचे से ही पानी का प्रवाह तेज़ गति से बह रहा था। वह दृश्य बड़ा ही भयावह था, फिर भी श्री गुरुजी ने पुल पार कर लिया और हम भी उनके पीछे पार हो गए।

''हम लोग चहेडू रेलवे स्टेशन पर पहुँचे। रेलवे के लोगों को पुल पार करने की सारी गाथा सुनाई। वहाँ एक इंजन खड़ा था जो गुराया स्टेशन तक जानेवाला था। इंजन में बैठकर श्री गुरुजी और हम लोग गुराया पहुँचे। भाग्य की बात, गुराया में एक मालगाड़ी लुधियाना जाने के लिए तैयार खड़ी थी। गार्ड के डिब्बे में बैठकर हम तीन घण्टे में लुधियाना पहुँच गए। इस प्रकार प्रातःकाल सात बजे चल कर सायंकाल

पाँच बजे हम लोग जालन्धर से लुधियाना (दूरी ५७ किलोमीटर) पहुँचे और वहाँ का कार्यक्रम ठीक प्रकार से सम्पन्न हो पाया। ऐसे कठोर निश्चय के थे श्री गुरुजी।''१

सच्चा मानव संगठन

श्री ए. एन. बाली अपनी पुस्तक 'Now it can be told' में लिखते हैं, ''पश्चिमी पाकिस्तान से आए

१. श्री गुरुजी जीवन प्रसंग भाग-१, राधेश्याम बंका, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, पृष्ठ-६०-६१.

शरणार्थी भारत में चाहे जहाँ भी रह रहे हों, एक स्वर से यही कहेंगे कि सच्चे मानव संगठन राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने ही उनका साथ दिया।''१

देशभक्ति पूर्ण काम

दिनांक ११ सितम्बर १९४८ को प.पू. श्री गुरुजी के लिखे पत्र के उत्तर में प्रथम गृहमन्त्री सरदार पटेल ने यह स्वीकारोक्ति की है, ''राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने संकटकाल में हिन्दू समाज की सेवा की, इसमें कोई संदेह नहीं। ऐसे क्षेत्रों में जहाँ उनकी सहायता की आवश्यकता थी, संघ के नवयुवकों ने स्त्रियों तथा बच्चों की रक्षा की तथा उनके लिए काफी काम किया। किन्तु मुझे विश्वास है कि संघ के लोग अपने देश-प्रेम को कांग्रेस के साथ मिलकर ही सफल कर सकते हैं।''२

सर्वस्वार्पण ही जीवन लक्ष्य

श्री कन्हैयालाल माणिकलाल मुंशी (विख्यात कांग्रेसी नेता) दिनांक २ अक्तूबर १९४९ के अपने एक वक्तव्य में कहते हैं, ''देश विभाजन के दुर्दिनों मे संघ के स्वयंसेवकों ने पंजाब और सिंध में अतुलनीय वीरता प्रकट की। उन नवयुवकों ने आततायी मुसलमानों का सामना करके हज़ारों स्त्रियों और बच्चों के मान और जीवन बचाए। अनेक नवयुवक इस कर्तव्य पालन में काम आए। ..संघ कट्टर राष्ट्रवादी संस्था है। ..संघ के नवयुवकों के लिए भारतभूमि माता जैसी पूज्य है जिसपर सर्वस्व अर्पण करना ही वे अपने जीवन का लक्ष्य मानते हैं।''३

सरदार पटेल की बोधक चेतावनी

कांग्रेस में एक ऐसा वर्ग भी था जो संघ को राष्ट्रभक्ति का एक श्रेष्ठ स्रोत मानता था। दिनांक ६ जनवरी १९४८ को आकाशवाणी लखनऊ से प्रसारित सरदार पटेल अपने भाषण में कहते हैं, ''कांग्रेस में जो लोग सत्तारूढ़ हैं, सोचते हैं कि वे अपनी सत्ता के बल पर संघ को कुचल सकेंगे। डंडे के बल पर आप किसी संगठन को दबा नहीं सकते। डंडा तो चोर डाकुओं के लिए होता है। आखिर संघ के लोग चोर-डाकू तो हैं नहीं। वे देशभक्त हैं और अपने देश से प्रेम करते हैं।''४

१. 'Now it can be told'] श्री ए.एन. बाली, आकाशवाणी प्रकाशन, जालंधर, पृष्ठ-१३६.
२. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड १०, पृष्ठ १३-१५.
३. ज्योति जला निज प्राण की, माणिक चन्द्र वाजपेयी, श्रीधर पराडकर, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, युगाब्द ५१०१ (१९९९ ईसवी), पृष्ठ १७-१८.
४. राष्ट्राय नमः पृष्ठ-१०३.

सभी आघातों को विफल करने का संकल्प

दिनांक २६.१.१६४८ को प्रधानमन्त्री पं. नेहरू ने अमृतसर की सभा में घोषणा की कि 'हम संघ को जड़-मूल से नष्ट करके ही रहेंगें।' दि. ३० जनवरी को चेन्नई के मुत्तय्या चेट्टियार विद्यालय में संघ कार्यकर्ताओं के समक्ष बोलते समय पं. नेहरू के इस वक्तव्य पर टिप्पणी करते हुए श्री गुरुजी ने कहा, ''संघ पर होने वाले सभी आघातों को हम विफल करेंगे। हमारा (संघ का) कार्य किसी की कृपा से नहीं बढ़ा। किसी की बुरी दृष्टि से वह समाप्त भी नहीं होगा।'' उनके उक्त उद्‌गारों की परीक्षा का काल सन्निकट है, सम्भवतः इसकी कल्पना श्री गुरुजी को भी न रही हो।

महात्मा गाँधी जी की हत्या

दिनांक ३० जनवरी को सायंकाल चेन्नई में प्रतिष्ठित नागरिकों के कार्यक्रम में अपना भाषण समाप्त कर श्री गुरुजी चाय पीना प्रारम्भ कर ही रहे थे कि उनको दिल्ली में हुई महात्मा गाँधीजी की हत्या की जानकारी दी गई। चाय की प्याली वैसी ही रखकर श्री गुरुजी कुछ देर तक मौन बैठे रहे, फिर कहा- ''देश का दुर्भाग्य है।'' आगामी प्रवास स्थगित कर वे तुरन्त विमान द्वारा नागपुर लौटे। चेन्नई छोड़ने के पूर्व उन्होंने पं.नेहरू, सरदार पटेल तथा श्री देवदास गाँधी को सांत्वना-परक संदेश तार द्वारा भेजे।

प्रतिकार न करते हुए शान्त रहने का आग्रह

दिनांक ३१ जनवरी की रात्रि को आकाशवाणी से समाचार प्रसारित होने लगे कि महाराष्ट्र में संघ स्वयंसेवकों तथा संघ कार्यालयों पर हिंसात्मक आक्रमण हो रहे हैं। नागपुर के स्वयंसेवकों ने तुरन्त ही केन्द्रीय कार्यालय तथा श्री गुरुजी के निवासस्थान की रक्षा का प्रबन्ध करते हुए श्री गुरुजी से मार्गदर्शन की प्रार्थना की। श्री गुरुजी बोले, ''शांत रहो, चाहे प्राण ही क्यों न चले जाएँ, किन्तु प्रतिकार का तनिक भी प्रयत्न न करो।''

श्री गुरुजी की गिरफ्तारी

भारत में सर्वदूर एवं विशेषतः नागपुर का वातावरण दिनांक १ फरवरी को अत्यन्त प्रक्षुब्ध हो उठा। उसी रात्रि श्री गुरुजी को महात्मा गाँधी जी की हत्या के अभियोग में भारतीय दंड विधान की धारा ३०२ व १२० के अन्तर्गत बन्दी बनाकर नागपुर कारागृह ले जाया गया। बाद में ४ फरवरी को सम्पूर्ण देश में संघ पर प्रतिबन्ध लगाए जाने की अधिकृत घोषणा भी कर दी गई। लगभग २० सहस्र स्वयंसेवकों को बिना किसी जाँच पड़ताल के कारागृह में बन्द किया गया।१

गांधीजी के प्राणप्रिय सिद्धान्तों की हत्या

एन्थोनी एलेन्ज मित्तम द्वारा लिखित 'फिलॉसफी एंड एक्शन ऑफ आर.एस.एस. फॉर हिन्द स्वराज्य', नामक पुस्तक की प्रस्तावना में श्री जमनादास मेहता लिखते हैं, ''विश्व के इतिहास में इसके पूर्व ऐसा कोई उदाहरण नहीं मिलता जब गांधीजी के समान आध्यात्मिक व्यक्तित्व का दुरुपयोग निजी स्वार्थ पूर्ति हेतु इस प्रकार किया गया हो। कुख्यात 'संघ का शिकार' इतिहास के जिन पन्नों पर अंकित है, वे भी उतने ही काले हैं जितनी कि ३० जनवरी की त्रासदी। इनमें से एक अवसर पर गांधीजी की हत्या हुई थी, दूसरे अवसर पर गांधीजी के निकटस्थ अनुयायियों ने ही 'संघ शिकार अभियान' चलाकर उनके प्राणप्रिय सिद्धान्तों सत्य व अहिंसा की हत्या की थी।''२

गांधी हत्या से संघ का कोई सम्बन्ध नहीं

गांधीजी की हत्या से संघ का लेश मात्र भी सम्बन्ध नहीं था, सरदार वल्लभभाई पटेल को यह बात तुरन्त ही मालूम हो गई थी। उन्होंने उसे प्रधानमन्त्री पं. जवाहरलाल नेहरू को पत्र द्वारा सूचित भी किया था। वह पत्र दि. २७ फरवरी १९४८ को लिखा गया था*, जो अब प्रकाशित हो चुका है। उस पर अधिक टीका-टिप्पणी की आवश्यकता नहीं है। सरदार पटेल ने लिखा- ''बापू की हत्या की जाँच में हो रही प्रगति पर मैने प्रायः प्रतिदिन ध्यान दिया है। सभी प्रमुख अपराधियों ने अपनी गतिविधियों के लम्बे और विस्तृत वक्तव्य दिए हैं। उन वक्तव्यों से यह बात भी स्पष्ट रूप से उभर कर आती है कि इस सारे मामले में संघ कहीं भी संलिप्त नहीं है।'' यदि सरकार में ज़रा भी न्यायबुद्धि होती, तो संघ पर लगा ग्रहण गांधी जी के मासिक श्राद्ध दिन तक भी न टिकता।३

सत्याग्रह पर्व

केवल विचार-विनिमय कर संघ पर लगाया गया प्रतिबंध हटाने के पक्ष में सरकार अनुकूल नहीं है, इसलिए उचित समय देखकर शांतिपूर्ण सत्याग्रह करना आवश्यक है, यह अब लगभग निश्चित हो गया था।

---

१. श्री गुरुजी समग्र दर्शन खण्ड-२, भारतीय विचार साधना, नागपुर, पृष्ठ २-१०.

२. पहली अग्नि परीक्षा, ना.गं.वझे, माणिकचन्द्र वाजपेयी, अर्चना प्रकाशन, भोपाल, पृष्ठ २३-२४.

* Sardar Patel's Correspondence 1945-50; Vol.VI, Edited by Durga Das. Navajivan Publishing House, Ahamedabad- 300014;Page-56.

३. आरती आलोक की, हरि विनायक दात्ये, ज्ञानगंगा प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ-१५६.

रणनाद (क्लेरियन काल)

श्री गुरुजी ने दि. १३ नवम्बर १९४८ को सभी स्वयंसेवकों को सम्बोधित करते हुए एक पत्र लिखा जिसमें सरकार की सर्वथा अयोग्य हठवादिता के उल्लेख के साथ अपना संघ कार्य प्रारम्भ करने हेतु माननीय सरकार्यवाह को दी गई आज्ञा का स्पष्ट उल्लेख है। पत्र के साथ एक संदेश भी आंदोलन हेतु श्री गुरुजी ने दिया, जो रणनाद (क्लेरियन काल) के नाम से प्रसिद्ध है। इस संदेश के अन्त में कहा गया था कि 'यह धर्म का अधर्म से, न्याय का अन्याय से, विशालता का क्षुद्रता से तथा स्नेह का दुष्टता से सामना है। विजय निश्चित है क्योंकि धर्म के साथ श्री भगवान् और उनके साथ विजय रहती है।

तो फिर हृदयाकाश से जगदाकाश तक भारत की जयध्वनि ललकार उठो और कार्य पूर्ण करके ही रहो। भारत माता की जय।'

सत्याग्रह प्रारम्भ

चारों ओर का वातावरण श्री गुरुजी की पुनः गिरफ्तारी से क्षुब्ध हो उठा। सारे देश में योजनापूर्वक शांतिपूर्ण आन्दोलन की तैयारियाँ होने लगीं। सरदार पटेल ने ५ दिसम्बर के अपने भाषण में कहा, ''कुछ लोग कहते हैं कि संघ सत्याग्रह प्रारम्भ करने जा रहा है। मैं उन्हें चेतावनी देता हूँ कि इस ढंग की चुनौतियों का सामना करने के लिए हम तैयार हैं।''

६ दिसम्बर को सरकार्यवाह श्री भैयाजी दाणी के नेतृत्व में देश भर में शाखाएँ प्रारम्भ करने का आन्दोलन भारत के सहस्रावधि नगरों तथा ग्रामों में प्रारम्भ हुआ। 'भारत माता की जय' तथा 'संघ अमर रहे' के नारों में स्थान-स्थान पर लगने वाली शाखाओं को देखने के लिए असंख्य जनता उमड़ने लगी। लाखों दीवारें 'संघ पर हुआ अन्याय दूर करो' की माँग से रंग गईं। संघ पर लगाए गए आरोपों का खण्डन करते हुए उसकी विशुद्ध राष्ट्रीय भूमिका को प्रकट करने वाले पर्चों तथा पुस्तिकाओं की वर्षा होने लगी। संघ

के इस आन्दोलन में हिन्दू समाज की एकात्मता व्यक्त होती थी। आंदोलन जाति, सम्प्रदाय, भाषा, पंथ, प्रांत जैसे बाह्य भेदों की अवहेलना करते हुए चलने लगा। हज़ारों युवकों ने नौकरी को लात मार दी, असंख्य छात्रों ने अध्ययन स्थगित कर दिया।१

कुल ७७०६० स्वयंसेवक सत्याग्रह करके गिरफ्तार हुए तथा विभिन्न अवधिके लिए कारागृह में रहे।२

---

१. श्री गुरुजी समग्र दर्शन खण्ड-२, पृष्ठ ३६-४४.

२. पहली अग्नि परीक्षा, पृष्ठ-१६६.

पं. नेहरू की घोषणा

दि. २० दिसम्बर १९४८ को जयपुर में चल रहे कांग्रेस अधिवेशन में भाषण देते हुए पं. नेहरू ने इस आन्दोलन को 'संघ के बच्चों का दुराग्रह' बताते हुए घोषणा की कि 'हम अपनी सम्पूर्ण शक्ति लगाकर आन्दोलन को दबा देंगे। हम इन लोगों को फिर कभी सिर नहीं उठाने देंगे।'१

श्री. केतकर की सिवनी कारागार में श्री गुरुजी से भेंट

प्रसिद्ध मराठी पत्र 'केसरी' के सम्पादक श्री ग.वि.केतकर १२ व १९ जनवरी १९४९ को श्री गुरुजी से सिवनी कारागार में मिले तथा कहा कि संघ यदि सत्याग्रह स्थगित कर दे तो बाहर के निष्पक्ष नेता मध्यस्थता करने का यथासंभव प्रयत्न करेंगे। इन भेंटों के परिणामस्वरूप यह सोच कर कि इन वार्ताओं का कुछ अच्छा परिणाम निकल सकता है, आंदोलन स्थगित करने का निश्चय किया गया। १९ जनवरी को उनका इस विषय में वक्तव्य श्री केतकर ने प्रकाशित किया तथा २२ जनवरी को, बाहर रहकर सारे आन्दोलन का सूत्र संचालन करने वाले प्राध्यापक श्री महावीर जी की ओर से भी आंदोलन स्थगित करने की घोषणा हुई। श्री गुरुजी के इस निर्णय का सर्वत्र स्वागत हुआ।

सरकार को प्रतिबन्ध हटा देना चाहिए

चण्डीगढ़ से प्रकाशित होने वाले अंग्रेजी दैनिक 'दि ट्रिब्यून' ने दिनांक २२ जनवरी १९४९ के अपने अंक में लिखा, ''राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के नेता ने आन्दोलन को बिना शर्त स्थगित कर प्रकरण के अन्तिम निपटारे के लिए मार्ग प्रशस्त किया है। अब आगे का कदम उठाने का कार्य सरकार का है, जिसे प्रतिबन्ध हटा देना चाहिए।''

प्रतिबंध हटा

संघ के स्वयंसेवकों का मनोबल दिनोंदिन वृद्धिंगत हो रहा था। जनमानस में भी उनके बारे में पूर्ववत् आस्था उत्पन्न हो रही थी। अतएव अखिल भारतीय जनाधिकार समिति के अध्यक्ष पं. मौलिचन्द्र शर्मा के रूप में एक तृतीय मध्यस्थ के द्वारा सरकार ने स्वयं होकर ही वार्तालाप के पुनरारंभ का नाटक रचा। वे श्री गुरुजी को १० जुलाई को बैतूल जेल में मिले। बातचीत के बाद संघ की भूमिका पुनः सुस्पष्ट करते हुए पं. मौलिचंद्र शर्मा को श्री गुरुजी ने एक निजी पत्र लिखा। इसी पत्र को आधार बनाकर दि.१२

---

१. श्री गुरुजी समग्र दर्शन खण्ड-२, पृष्ठ-४५.

जुलाई सायंकाल केन्द्रीय शासन ने संघ पर से प्रतिबन्ध हटाने की घोषणा रेडियो पर की। दि. १३ प्रातःकाल श्री गुरुजी बैतूल कारागृह से मुक्त हुए तथा दोपहर की ग्रांट ट्रंक एक्सप्रैस से वे नागपुर आ गए। स्टेशन पर ३० हज़ार जनता ने गगनभेदी जयजयकार से उनका स्वागत किया।

सत्य सिर पर चढ़कर बोला

कहावत है कि 'सत्य सिर पर चढ़कर बोलता है।' उसी के अनुसार संघ के बारे में फैलाए गए भ्रम का निराकरण अंततः स्वयं सरकार को ही करना पड़ा। मुम्बई विधानसभा में जब कुछ सदस्यों ने प्रश्न पूछे कि क्या संघ के नेतृत्व ने सरकार को कोई अभिवचन दिया है जिसके कारण संघ पर से पाबन्दी हटाई गई है तो गृहविभाग द्वारा बिना संकोच के उत्तर दिया गया कि ''अनावश्यक प्रतीत होने के कारण ही रा.स्व. संघ पर से बिना शर्त प्रतिबन्ध उठाया गया है। सरसंघचालक जी ने किसी भी प्रकार का अभिवचन या आश्वासन नहीं दिया है। (मुम्बई विधानसभा कार्यवाही, दिनांक १४.१०.१९४९, पृष्ठ २१२६)१

प्रतिबन्ध काल के समय सहयोग करनेवाले श्रेष्ठ महानुभावों से प्रत्यक्ष भेंट कर तथा आवश्यक पत्र लिख कर प. पू. श्री गुरुजी ने कृतज्ञता व्यक्त की। इनमें पं.नेहरू, सरदार पटेल, डा. बाबासाहब अम्बेडकर, श्री श्यामाप्रसाद मुखर्जी, श्री काकासाहब गाडगिल,राजर्षि पुरुषोत्तम टंडन, श्री नानासाहब खापर्डे, श्री गोपाल स्वामीजी अय्यंगार, श्रीमान् त्रिलोकी नाथ जी भार्गव आदि प्रमुख रूप से सम्मिलित थे।

स्वागत पर्व

असत्य पर सत्य की विजय हुई। १२ जुलाई १९४९ की सायंकाल तक संघ विरोधियों द्वारा नष्टप्राय समझा गया, उपेक्षा का पात्र बना हुआ संघ, देखते ही देखते भारत की कोटि-कोटि जनता का आकर्षण केन्द्र ही नहीं आशा केन्द्र भी बना हुआ दिखाई देने लगा। विगत लगभग दो वर्षों से भ्रामक दूषित प्रचार का शिकार बना संघ और उसके सरसंघचालक श्री गुरुजी जनता के शिरोभूषण बन गए। पुणे (२४ जुलाई), नागपुर (२९ जुलाई), दिल्ली (२१अगस्त), अमृतसर (२८ अगस्त), लखनऊ (१ सितम्बर), पटना (४ सितम्बर), कोलकाता (८ सितम्बर), इन्दौर (१२ सितम्बर), मुम्बई (६ नवम्बर), मदुरै (१७ दिसम्बर) तथा अन्यत्र जहाँ भी वे गए सामान्य जनता ने ही नहीं प्रभावी जननेताओं ने भी उनका हार्दिक राजसी स्वागत किया। उनकी स्वागत-सभाओं में लाखों लोग आए। सबने उनकी देवतुल्य वाणी को मन्त्र-मुग्ध होकर सुना

---

१. पहली अग्नि परीक्षा, पृष्ठ २३६-३७.

तथा सराहा। अनेक संस्थाओं ने उन्हें मानपत्र अर्पित किए तथा उनसे देश का मार्गदर्शन करने की प्रार्थना की।

बी.बी.सी. का प्रसारण

ब्रिटिश आकाशवाणी बी.बी.सी. संघ को दक्षिणपन्थी हिन्दू साम्प्रदायिक संगठन ही घोषित करती रही थी। उसे भी अपने समाचार प्रसारण में कहना पड़ा कि ''नेहरू और सरदार पटेल के बाद कौन? इस प्रश्न का उत्तर वामपंथियों के नेता नहीं, संघ प्रमुख गोलवलकर हैं। वे जब दिल्ली में आए तो ढाई लाख लोग उनका भाषण सुनने उपस्थित हुए। भारत में केवल नेहरू जी ही इतनी बड़ी भीड़ जुटा सकते हैं। १९ मास तक प्रतिबन्धित रहनेवाली संस्था के प्रमुख का इतना भव्य स्वागत व इतनी बड़ी सभा अपने-आप में एक मिसाल है।'' उसे यह भी कहना पड़ा कि ''संघ को नाज़ी संगठन तथा संघ प्रमुख को तानाशाह प्रचारित किया जाता है। पर श्री गोलवलकर में तो ऐसा कुछ नहीं दिखाई पड़ा जिससे उनकी तुलना योरोपीय तानाशाह हिटलर या मुसोलिनी से की जा सके।

सर्वविदित परीक्षाफल

श्री गुरुजी ने अपने भाषणों में कहा, ''प्रतिदिन हम संघ स्थान पर परमेश्वर की प्रार्थना करते हैं कि हे परमेश्वर, हमें शील दो, धैर्य दो, चारित्र्य दो। तो उन्होंने यह भी सोचा होगा कि जिन्हें दान देना है वे कितने योग्य हैं इसकी परीक्षा भी की जानी चाहिए। इसलिए यह ईश्वर द्वारा ली गई परीक्षा ही है, जिसका परीक्षाफल सर्वविदित है।''[१]

राष्ट्र प्रहरी

स्वातंत्र्योपरान्त भारत के नवनिर्माण के समय, उपस्थित हो रही विविध समस्याओं का हल ढूँढना भी आवश्यक था। कश्मीर विलयन की समस्या उन में से एक थी।

कश्मीर का विलय (१९४७)

संघ ने प्रारम्भ से ही यह प्रयास किया कि जम्मू-कश्मीर का विलय भारत मे हो और यथाशीघ्र हो। संघ ने सबसे पहले तो स्वतन्त्र कश्मीर का सपना सँजोने हेतु महाराजा को प्रेरित करनेवाले, वहाँ के प्रधानमन्त्री श्री रामचन्द्र काक द्वारा अपनाई जा रही देशद्रोही भूमिका का काला चिट्ठा सप्रमाण उनके सामने प्रस्तुत कर श्री काक को पदच्युत करवाया। तत्पश्चात् महाराजा का मन विलय के पक्ष में करने हेतु

---

१. पहली अग्नि परीक्षा, पृष्ठ २४१-४४.

बहुआयामी प्रयास किए। पहले तो जनजागरण प्रारम्भ किया गया, फिर विलय के पक्ष में व्यापक हस्ताक्षर अभियान जम्मू क्षेत्र में चलाया गया व जम्मू के संघचालक पं. प्रेमनाथ डोगरा के नेतृत्व में हस्ताक्षरयुक्त ज्ञापन महाराजा को सौंपा।

प्रख्यात अधिवक्ता रायबहादुर बद्रीदास पंजाब प्रांत के संघचालक थे। वे महाराजा के महत्त्वपूर्ण मामलों में उनकी ओर से अदालत में पैरवी करते थे। वे सन १९४७ के सितम्बर मास में श्रीनगर आकर महाराजा से मिले तथा उन्हें विलय हेतु राज़ी करने का भरपूर प्रयास किया। उत्तर प्रदेश के संघचालक बैरिस्टर नरेन्द्रजीतसिंह की ससुराल महाराजा के प्रमुख दीवान के यहाँ थी। इस नाते उनके भी महाराजा से निकट के सम्बन्ध थे। वे भी महाराजा को प्रभावित करने का प्रयास करते रहते थे। श्री बलराज मधोक के समान जिन कार्यकर्ताओं का निकट सम्बन्ध महाराजा से था, वे पाकिस्तानी खतरे व उसकी नीयत की भी जानकारी उनको देते रहते थे। ये सारे प्रयास श्री गुरुजी की प्रेरणा से व उनकी जानकारी में चल रहे थे।

श्री गुरुजी का श्रीनगर आगमन

महाराजा से भेंट कर उन्हें राजी करने हेतु बैरिस्टर नरेन्द्रजीत सिंह जी व दिल्ली प्रांत प्रचारक श्री वसंतराव ओक के साथ श्री गुरुजी १७ अक्तूबर, १९४७ को विमान द्वारा श्रीनगर पहुँचे। पंजाब प्रान्त प्रचारक श्री माधवराव मूळ्ये भी वहाँ उपस्थित थे। १८ अक्तूबर को महाराजा से मिलने, श्री गुरुजी उनके निवास 'कर्ण महल' पहुँचे। महाराजा हरिसिंह व महारानी तारा दोनों श्री गुरुजी के स्वागत के लिए द्वार पर उपस्थित थे। लगभग साढ़े दस बजे चर्चा प्रारम्भ हुई। महाराजा के भेंट के समय संघ का अन्य कोई अधिकारी वहाँ उपस्थित नहीं था। श्री गुरुजी को विदा करते समय महाराजा ने कहा कि मैं आपके सुझाव पर अवश्य विचार करूँगा। विदाई के समय उन्होंने श्री गुरुजी को दो बहुमूल्य कश्मीरी शाल भी भेंट किए।

श्री गुरुजी के इस प्रवास में सरदार पटेल ने सहयोगी की भूमिका निभाई। श्रीनगर से वापस लौटकर उन्होंने महाराजा की अनुकूल मनःस्थिति से सरदार पटेल को अवगत कराया। सौभाग्य से तब तक श्री मेहरचन्द महाजन जम्मू-कश्मीर के प्रधानमन्त्री का पदभार सम्हाल चुके थे। वे भी महाराजा को बताते रहे कि श्री गुरुजी का परामर्श सही है। अंततः महाराजा ने विलय का निर्णय किया और २६ अक्तूबर को राज्य के विलयपत्र पर हस्ताक्षर हो गए। यह कहा जा सकता है कि श्री गुरुजी की यह भेंट महाराजा को विलय का निर्णय करवाने में निर्णायक रही क्योंकि इस भेंट के बाद ही विलय की प्रक्रिया प्रारम्भ हो गई। पाकिस्तानी हमले ने उस निर्णय पर अन्तिम मुहर लगवाई।१

वर्तमान कश्मीर समस्या का हल

कश्मीर समस्या के हल के बारे में अक्तूबर १९६७ में 'आर्गेनाइज़र' के सम्पादक से बातचीत करते हुए श्री गुरुजी कहते हैं, ''कश्मीर को अधिकार में रखने का एक ही रास्ता है और वह है सम्पूर्ण विलय। धारा ३७० समाप्त करनी चाहिए। हमारे राष्ट्रीय हित क्या हैं, इसका निर्णय कर हमें उनकी रक्षा हेतु कदम बढ़ाना चाहिए। तथाकथित विश्वमत की हम चिन्ता न करें। जूनागढ़, हैदराबाद या गोवा के सम्बन्ध में क्या यह विश्वमत कभी आपके पक्ष में था? भारत के हितों की दृष्टि से ही भारत का प्रशासन चलना चाहिए, परकीय राष्ट्रों के हितों में उनकी आज्ञानुसार नहीं। केवल विश्वमत पर आधारित हमारी नीतियाँ हुईं तो इसका अर्थ होगा कि हम वृद्ध आदमी, उसका पुत्र और उनके गधे की कहानी दोहरा रहे हैं।''२

आज भी श्री गुरुजी के ये विचार समीचीन लगते हैं।

भाषावार राज्य रचना

सन १९५२ के बाद देश में भाषानुसार प्रांत रचना की माँग बलवती होने लगी। इस प्रश्न को आधार बनाकर भावनाएँ भड़काने का कार्य कुछ नेताओं ने प्रारम्भ कर दिया। राज्य पुनर्गठन आयोग के गठित होने पर विभिन्न प्रकार की माँगें तथा परस्पर विरोधी दावे सम्मुख आने लगे। इन्हीं दिनों मुम्बई में प्रान्तीयता विरोधी सम्मेलन प.पू.श्री गुरुजी की अध्यक्षता में हुआ था। श्री. जमनादास मेहता स्वागताध्यक्ष थे तथा मुम्बई के महापौर श्री डाह्याभाई पटेल ने इस सम्मेलन का उद्घाटन किया था। इस अवसर पर अपने अत्यन्त प्रखर तथा विचार प्रवर्तक, अध्यक्षीय भाषण में श्री गुरुजी ने कहा, ''मैं एक देश, एक राज्य का समर्थक हूँ। एक ओर सारे संसार का एक राज्य बने ऐसा कहा जाता है और दूसरी ओर सम्पूर्ण भारत एक राज्य हो, ऐसा विचार किसी ने रखा तो कुछ लोगों की भौंहें तन जाती हैं।

''वास्तव में भारत में एक ही केन्द्र शासन होना चाहिए और शासन व्यवस्था की दृष्टि से राज्य के स्थान पर विभाग होने चाहिए। आज हमारे नेतागण महाराष्ट्रीय, गुजराती आदि भिन्न संस्कृतियों की बातें

---

१. ज्योति जला निज प्राण की, पृष्ठ २२९-३२.
२.नवयुग प्रवर्तक श्री गुरुजी, लोकहित प्रकाशन, लखनऊ, पृष्ठ १६०-६१.

करते हैं। किन्तु हमारी तो आसेतु हिमाचल एक ही संस्कृति है तथा संस्कृति तो राष्ट्र की आत्मा होती है। इस कारण हमें देश की संस्कृति, परम्परा, राष्ट्रधर्म तथा कुलधर्म की रक्षा करनी चाहिए। देश को धर्मशाला बनाकर काम नहीं चलेगा। सौदेबाज़ी की भाषा रोककर हमें राष्ट्र का विचार करना चाहिए।''१

सरकारी दमन प्रवृत्ति का कड़ा विरोध

भाषानुसार प्रांत रचना का विरोध करते समय श्री गुरुजी ने अपने राष्ट्रीय विवेक को सदैव जागृत रखा। इस विवेकशीलता की अनुभूति संयुक्त महाराष्ट्र आन्दोलन के समय भी हुई। भाषा के आधार पर

आन्ध्र का राज्य निर्माण करने को मान्यता प्रधानमंत्री पं. नेहरू द्वारा प्रदान कर दी गई थी किन्तु गुजरात और महाराष्ट्र को मिलाकर विशाल द्विभाषी राज्य बनाया गया। इस निर्णय के विरोध में संयुक्त महाराष्ट्र समिति के नेतृत्व में छिड़े आन्दोलन को कुचलने हेतु जब मुम्बई सरकार ने दमननीति को अपनाया तो इस प्रवृत्ति का कड़ा विरोध करते हुए दि. २३-०७-१९५६ को दिए एक वक्तव्य में श्री गुरुजी कहते हैं, ''सरकार गुण्डों की सहायता से सत्याग्रह को कुचलना चाहती है। सरकार द्वारा प्रोत्साहित गुंडाशाही को सहना असम्भव है। इस गुंडागर्दी का यदि मैंने विरोध नहीं किया तो माना जाएगा कि मैंने अपने कर्तव्य का निर्वाह नहीं किया। मैं कर्तव्यच्युत नहीं रह सकता।''२

इसी प्रकार जब प्रतापगढ़ में श्री छत्रपति शिवाजी की मूर्ति के अनावरण कार्यक्रम पर संयुक्त महाराष्ट्र समिति ने पं. नेहरू के आगमन व अनावरण कार्यक्रम का कड़ा विरोध करने का निश्चय किया तो श्री गुरुजी को यह अत्यन्त अनुचित लगा। इस अवसर पर उन्होंने कहा, ''छत्रपति शिवाजी की मूर्ति का अनावरण करने हेतु मान्यता देते समय पं. नेहरू को झुकना पड़ा है। आज तक अपनी ही अहंकारी प्रवृत्ति में डूबे रहने के कारण उन्होंने अनेकों बार शिवाजी का अपमान किया है। आज सम्पूर्ण भारत के शासनसूत्रधार पं.नेहरू विलम्ब से ही क्यों न हो, एक असामान्य राष्ट्रपुरुष के प्रति आदर व्यक्त करने हेतु पधार रहे हैं। शिवाजी महाराज न केवल महाराष्ट्र के अपितु सम्पूर्ण भारत के वन्दनीय महापुरुष हैं। साथ ही इस युगपुरुष की यथार्थ महत्ता समूचे विश्व को बताने वाला यह प्रसंग है। यह एक अपूर्व योग हमें प्राप्त

---

१. पांचजन्य, ३१. ५. १९५४, पृष्ठ ५ व ११.
२. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड १०, पृष्ठ २४९-५०.

हुआ है, इसमें अपशकुन नहीं होना चाहिए। ऐसा प्रयत्न कोई न करे। ऐसा करने से शिवाजी के बारे में अनादर तथा अश्रद्धा का भाव ही प्रगट होगा। इस कारण मैं सभी बन्धु, भगिनी तथा माताओं से आग्रहपूर्वक विनती करता हूँ कि वे विवेकबुद्धि से काम लें। अपना विवेक जागृत रख, इस कार्यक्रम में भाग लें।''१

श्री गुरुजी के इस वक्तव्य के फलस्वरूप अनुकूल-प्रतिकूल प्रतिक्रियाएँ व्यक्त हुईं। परन्तु परिपत्र के कारण संयुक्त महाराष्ट्र के समर्थकों को विचार करने हेतु बाध्य होना पड़ा तथा परिस्थिति को नया मोड़ मिला।

पंजाबी सूबा

कुछ समय पश्चात् पंजाबी सूबे का विवाद निर्माण हुआ तथा उसमें से ही पंजाब और हरियाणा दो शासकीय राज्य निर्मित हुए। इस विवाद के परमोच्च शिखर के समय भी श्री गुरुजी ने राष्ट्रीय एकता तथा सब भारतीय भाषाएँ राष्ट्रीय भाषाएँ हैं, की अपनी भूमिका को दृढ़ता से प्रस्तुत किया। श्री महीप सिंह, खालसा कालेज, मुम्बई को दि. १२.०९.१९५५ के लिखे पत्र में वे कहते हैं, ''भाषा का प्रेम भी क्यों न हो, वह यदि विच्छेद के लिए प्रयुक्त हो, तो त्याज्य ही मानना चाहिये।''२

राष्ट्रीय एकात्मता का पोषण

संघ के भूतपूर्व सरकार्यवाह श्री माधवराव मूळ्ये पंजाब से सम्बन्धित अपने एक संस्मरण में कहते हैं, ''श्री गुरुजी का अथक और असीम परिश्रम राष्ट्रीय एकात्मता और अखण्डता के प्रति समर्पित था। राजनैतिक स्वार्थ की आँधी में बड़े-बड़े लोगों के पैर उखड़ते देखे गए

हैं। ऐसे व्यामोह एवं स्वार्थ की आँधी के बीच भी श्री गुरुजी को हमने राष्ट्रहित में अडिग पाया है। पंजाब की ही बात है। पंजाबी और हिन्दी का भाषाई आन्दोलन चल रहा था। हिन्दुओं में आपसी तनाव था। केशधारी और गैर केशधारी बन्धुओं के बीच विवाद उठ खड़ा हुआ था। जब श्री गुरुजी पंजाब के दौरे पर आए तो इस विवाद के सम्बन्ध में उनके विचार सुनने के लिए अमृतसर, जालन्धर, लुधियाना आदि सभी स्थानों के कार्यक्रमों में जनता बड़ी संख्या में उपस्थित हुई। श्री गुरुजी ने विवाद में उलझे हुए दोनों पक्षों को इस कटुता के लिए ज़िम्मेदार ठहराया। उन्होंने कहा, ''सत्य स्वीकार न करने के कारण ही यह झगड़ा खड़ा हुआ। पंजाब में पंजाबी मातृभाषा है, इसे सभी को स्वीकार करना चाहिए। साथ ही सिख बन्धुओं को अपने

१. साप्ताहिक 'आर्गेनाइज़र' नई दिल्ली, २५.११.१९५७, पृष्ठ-७.
२. पत्ररूप श्री गुरुजी, भारतीय विचार साधना, नागपुर, पृष्ठ-४५५.

को हिन्दू कहलाने में कदापि इनकार नहीं करना चाहिए।''[१]

पुर्तगाली आधिपत्य की समाप्ति

अंग्रेजों के सन् १९४७ में भारत छोड़ने के पश्चात् भी पुर्तगाली शासक गोवा में डटे हुए थे। गोवा को पुर्तगालियों के शिकंजे से मुक्त करवाने हेतु पुणे में 'गोवा विमोचन समिति' की स्थापना की गई। केन्द्रीय शासन से आवश्यक अनुरोध करने के उपरान्त १९५५ में 'गोवा मुक्ति आन्दोलन' प्रारम्भ किया गया जिसमें स्वयंसेवकों ने सोत्साह भाग लिया। राजाभाऊ महंकाल नाम का एक स्वयंसेवक पुर्तगालियों द्वारा दागी गई गोलियों से शहीद भी हो गया। निर्मम अत्याचारों के बावजूद भी सत्याग्रह चलता रहा। पुर्तगालियों के उपनिवेश के विरोध के स्थान पर भारत सरकार ने सत्याग्रहियों पर ही बन्धन लगाने प्रारम्भ किए। आन्दोलन एवं सरकारी नीति का सूक्ष्मता से अवलोकन कर रहे प.पू.श्री गुरुजी ने दि. २०.०८.१९५५ को मुम्बई से प्रकाशित अपने वक्तव्य में कहा, ''गोवा में पुलिस कार्रवाई करने और गोवा को मुक्त कराने का इससे ज्यादा अच्छा अवसर कोई नहीं आएगा। इससे हमारी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा में वृद्धि होगी तथा आस-पास के जो राष्ट्र सदा हमें धमकाते रहते हैं, उन्हें भी पाठ मिल जाएगा।

''भारत सरकार ने गोवा मुक्ति आन्दोलन का साथ न देने की घोषणा कर मुक्ति-आन्दोलन की पीठ में छुरा मारा है। भारत सरकार को चाहिए कि भारतीय नागरिकों पर हुई इस गोलीबारी का प्रत्युत्तर दे और मातृभूमि का जो भाग अभी तक विदेशियों की दासता में जकड़ा हुआ है, उसे अविलम्ब मुक्त करने के उपाय करे। झूठी अन्तर्राष्ट्रीय प्रतिष्ठा का विचार हृदय से निकाल कर कदम आगे बढ़ाना चाहिए। मुम्बई में पुलिस ने प्रदर्शनकारियों पर जो गोली चलाई, वह वीरता गोवा की सीमा पर दिखाई जाती, तो आठ दिनों में पुर्तगाली गोवा से भाग खड़े होते। घर के लोगों पर ही गोली चलाने में कोई वीरता नहीं है। प्रदर्शनकारियों को चाहिए कि वे हड़ताल और प्रदर्शन के समय किसी भी अवस्था में शान्ति भंग न होने दें।''[२]

श्री गुरुजी गोवा के प्रश्न को विशुद्ध राष्ट्रीय प्रश्न मानते थे। वे कहते थे कि यदि पं. नेहरू स्वयं तिरंगा ध्वज हाथ में लेकर गोवा मुक्ति आन्दोलन का नेतृत्व करते हैं तो अपेक्षित संख्या में स्वयंसेवकों को

१. श्री गुरुजी जीवन प्रसंग भाग-१, पृष्ठ -३३५
२. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड १०, पृष्ठ २४८-४९.

सत्याग्रह में भेजने की उनकी तैयारी है।

दादरा और नगर हवेली की मुक्ति

श्री गुरुजी की इच्छा के अनुसार दिनांक २ अगस्त, १९५४ को एक-सौ स्वयंसेवकों ने दादरा और नगर हवेली की पुर्तगाली बस्तियों पर अचानक आक्रमण कर दिया। इसका नेतृत्व पुणे के संघचालक स्वर्गीय विनायकराव आपटे कर रहे थे। अनेक प्रमुख संघ कार्यकर्ताओं ने इस कार्य में भाग लिया। उन्होंने गुरिल्ला रणनीति अपनाई और सेल्वासा के पुलिस मुख्यालय पर आक्रमण करके वहाँ के १७५ सैनिकों को बिना शर्त आत्मसमर्पण करने पर विवश कर दिया। वहाँ राष्ट्रीय तिरंगा फहराकर उसी दिन वह प्रदेश केन्द्रीय सरकार को सौंप दिया गया।[१] दिनांक २ अगस्त, १९६८ को जब इस ऐतिहासिक घटना की रजत-जयन्ती मनायी गयी तो सेल्वास की जनता ने १०० स्वतन्त्रता-सेनानियों को आमन्त्रित करके उनका अभिनन्दन किया। सन १९८७ मे महाराष्ट्र प्रदेश सरकार ने भी उन्हें स्वतन्त्रता सेनानी के रूप में मान्यता दी और सम्मान प्रदान किया।

गोवा के बारे में भी ऐसी योजना चल ही रही थी कि सन १९६२ में सरकार ने ही फौजी कार्यवाही करके गोवा को मुक्त करा लिया। भले ही यह कार्रवाई देर से की गई तो भी देश ने तथा प.पू. श्री गुरुजी ने इसका स्वागत किया।

गोवा की स्वतन्त्रता के बाद पं. नेहरू तथा अन्य राजनीतिक नेताओं ने यह कहना शुरु किया कि वे गोवा की पृथक् संस्कृति को सुरक्षित रखेंगे। इस पर श्री गुरुजी ने डंके की चोट पर कहा कि भारत का ही अंग होने के कारण गोवा की संस्कृति भी भारतीय ही होगी।

नेपाल से भाव बन्धन प्रगाढ़ करने की दिशा में

श्री गुरुजी को राष्ट्रीय सीमाओं की सुरक्षा की भारी चिन्ता रहती थी। विशेषतः उनकी दृष्टि हिमालयवर्ती प्रदेश में चीनियों की आक्रामक गतिविधियों पर थी। इस हेतु सन १९६३ में वे नेपाल गए। उस समय नेपाल से हमारे सम्बन्ध एक प्रकार से रसातल को जा चुके थे । महाशिवरात्रि के दिन महादेव पशुपतिनाथ का दर्शन करके श्री गुरुजी ने नेपाल-नरेश से भेंट की और हिन्दुओं तथा हिन्दुत्व सम्बन्धी समस्याओं पर उनसे अन्तरंग वार्ता की। उन्होंने नेपाल-नरेश को संघ-सम्मेलन को सम्बोधित करने का भी

---

१. साप्ताहिक 'आर्गेनाइजर' नई दिल्ली, २५.११.१९५७, पृश्ठ-७

निमन्त्रण दिया। नरेश भी अनुकूल रूप से सहमत हुए। वापस लौटने पर श्री गुरुजी ने प्रधानमन्त्री श्री नेहरू और गृहमन्त्री श्री लाल बहादुर शास्त्री को पत्र लिखे तथा उन्हें वार्ता की दिशा से अवगत कराया। २५ दिसम्बर, १९६४ को रेडियो नेपाल ने घोषणा की दि. १४ जनवरी १९६५ को नागपुर में मकर सक्रान्ति समारोह को सम्बोधित करने के लिए संघ के निमन्त्रण को महाराजा महेन्द्र ने स्वीकार कर लिया है।

इस समाचार ने चीन और पाकिस्तान को हिला दिया। नेपाल अपने आन्तरिक मामलों में भारत की उत्तेजक गतिविधियों की प्रतिक्रियास्वरूप इन देशों के निकट आता जा रहा था। वास्तव में तो हमारी सरकार के लिए यही उचित होता कि इस नए उपक्रम का वह हृदय से स्वागत करती। इससे उत्तर के एक प्रहरी से उसके बिगड़े सम्बन्ध पुनः सहज बन जाते। यदि दोनों देशों के समान प्राचीन धार्मिक तथा सांस्कृतिक सम्पर्कों को पुनः पुष्ट किया जाता तो नेपाल से अटूट सम्बन्ध स्थापित करने का उससे बढ़कर अचूक अन्य आधार नहीं हो सकता था। पर कैसा दुर्भाग्य! भारत सरकार ने न जाने किन कारणों से नेपाल-नरेश को भारत न आने का 'परामर्श' दिया। ११ जनवरी १९६५ को नरेश ने श्री गुरुजी को पत्र लिखा। उसमें कहा

गया था, ''मुझे बड़ा क्षोभ है कि एक हिन्दू समारोह में मुझे हिन्दू के नाते भाग लेने से वंचित किया जा रहा है।'' इस अवसर के लिए उन्होंने एक लम्बा तथा प्रेरणादायी संदेश भी भेजा। उसमें हिन्दुओं को स्मरण कराया गया कि उनके संगठन की आवश्यकता है और उन्हें अपने विश्वसनीय ध्येय को पूरा करना है। उन्हें तो समूची संतप्त मानव जाति तक हिन्दुत्व का सान्त्वना भरा स्पर्श पहुँचाना है। इस सम्बन्ध में उन्होंने संघ की भूमिका की भी सराहना की।

नेपाल के प्रधानमन्त्री डॉ. तुलसी गिरि ने भारत के विचित्र व्यवहार पर खेद प्रकट करते हुए कहा, ''यदि महामहिम रा.स्व.संघ को सम्बोधित करते तो उसमें क्या अनुचित होता? जब पोप ने मुम्बई में चुखारिस्त सम्मेलन को सम्बोधित किया तो किसी ने कोई आपत्ति नहीं की। यदि कोई हिन्दू नरेश हिन्दू संगठन को सम्बोधित करे और हिन्दुत्व की एकता पर बल दे तो उस पर किसी को क्यों आपत्ति हो?''

भीषण त्रुटि का अविस्मरणीय परिमार्जन

तथापि इस भीषण त्रुटि का परिमार्जन तब हुआ, जब २० अक्तूबर, १९९७ को त्रिदिवसीय विराट् हिन्दू सम्मेलन के उद्घाटन के लिए हरिद्वार की पुण्य नगरी में संसार के एकमात्र हिन्दू महाराजा, नेपाल नरेश महामहिम श्री वीरेन्द्र विक्रम शाह देव और महारानी ऐश्वर्य राज्यलक्ष्मी का आगमन हुआ। सारा हरिद्वार उनके स्वागत में भगवे रंग में रंग गया। इस सम्मेलन का आयोजन कांची कामकोटि पीठ और भारत खण्ड के विश्व हिन्दू महासंघ द्वारा संयुक्त रूप से किया गया था। महाराजा और महारानी का हार्दिक अभिनन्दन करने के लिए ऋषिकुल आयुर्वेद महाविद्यालय के प्रांगण में लगभग एक लाख लोग एकत्र हुए। इस अवसर का असाधारण महत्त्व इस बात को लेकर था कि नेपाल के किसी राज-दम्पति ने भारत में किसी सार्वजनिक समारोह में पहली बार भाग लिया था। 'नेपाल-नरेश की जय', 'भारत-नेपाल एकता ज़िंदाबाद', 'भारत माता की जय' जैसे हर्षोल्लासपूर्ण उद्घोषों से हरिद्वार का सारा आकाश गूँज उठा था। यह भारतवासियों का नेपाल के प्रति सच्चे अनुराग का उद्घोष था।

हर्ष विभोरक ऐतिहासिक दृश्य

नेपाल-नरेश की हरिद्वार यात्रा के प्रसंग में भावाकुलता का चरम आवेश तब दृष्टिगोचर हुआ जब राज-दम्पति गंगा मैया की परम्परागत भक्तिपूर्ण पूजा के लिए 'हरि की पौड़ी' पहुँचे। वस्तुतः नेपाल-नरेश पूजा के लिए सारी सामग्री नेपाल से ही अपने साथ लेकर आए थे। उनके साथ उनके कुलगुरु थे। राज-दम्पति ने गंगा मैया की देदीप्यमान आरती उतारी। उनके साथ ही वहाँ उपस्थित भक्तों द्वारा हज़ारों आरतियाँ एक साथ सम्पन्न हुईं।७

आशादीप

प्रतिबन्ध समाप्ति के बाद हुए अपने देशव्यापी प्रवास में श्री गुरुजी असम नहीं जा पाए थे। अतः वे सन १९५० के फरवरी मास में असम गए। वहाँ कुछ राष्ट्रीय समस्याओं के बारे में उन्होंने अपने विचार व्यक्त किए।

पूर्वी बंगाल के निर्वासितों का करुण चीत्कार

सन १९५० के प्रारम्भ में ही पूर्वी पाकिस्तान (आज का बाँग्लादेश) में हिन्दू-नागरिकों पर अप्रत्याशित अत्याचार हुए। उनका सब कुछ छीनकर उन्हें घरों से निष्कासित कर दिया गया। ऐसी भयंकर परिस्थिति में उन्होंने प्राण त्याग कर देना या अपना सर्वस्व छोड़कर भारत आना स्वीकार किया, परन्तु मतान्तरित नहीं हुए। इसके फलस्वरूप बंगाल और असम में निर्वासितों की बाढ़ सी आ गई।

१. कृतिरूप संघ दर्शन, पृष्ठ-३२-३४.

'वास्तुहारा सहायता समिति' का गठन

स्थिति और भी खराब हो गई। एक ओर पाकिस्तानी अत्याचार हो रहे थे तो दूसरी ओर केन्द्रीय शासन जड़ पाषाण के समान मौन हो गया था। इससे रुष्ट होकर डा. श्यामाप्रसाद मुखर्जी सरकार से अलग हो गए। श्री गुरुजी ने स्वतः कोलकाता आकर निर्वासितों की दशा का निरीक्षण किया तथा उनका हृदय विदीर्ण करने वाला करुण चीत्कार सुनकर वे अत्यन्त व्यथित हुए। उन्हीं के आदेशानुसार, बंगाल में संघ कार्य की सीमित शक्ति होते हुए भी दिनांक ८ फरवरी १९५० को सुविख्यात बैरिस्टर रणदेव चौधरी की अध्यक्षता में 'वास्तुहारा सहायता समिति' का कोलकाता में गठन किया गया।

श्री गुरुजी का प्रथम वक्तव्य (दिल्ली : ७ मार्च, १९५०)

श्री गुरुजी कोलकाता से नई दिल्ली आए तथा वहाँ से ७ मार्च को दिए एक वक्तव्य में उन्होंने आपत्तिग्रस्त बन्धुओं की सहायता हेतु तन-मन-धन पूर्वक सहयोग का निवेदन किया। इस वक्तव्य में उन्होंने आगे कहा-

''...हम यह नहीं भूल सकते हैं कि अपने वर्तमान नेतृत्व द्वारा धर्म-भेद के आधार पर देश का विभाजन स्वीकार कर लिया जाना उनकी दुरावस्था का प्रत्यक्ष कारण है। विभाजन धर्म-भेदमूलक न होकर भौगोलिक है, इस भ्रम से नेता स्वयं को और जनता को मुक्त करें। हम अपने इन अभागे डेढ़ करोड़ बंधुओं के प्रति क्या भाव रखें? उन्हें अपने देशवासी मानें या विदेशी? पुनर्वास मंत्री और शासन के जिम्मेदार अधिकारी उन्हें विदेशी नागरिक कहते हैं। वह सबका अपमान है, जले पर नमक छिड़कना है। वास्तव में वे भारतीय नागरिक हैं, परन्तु अचानक उनके मन के विरुद्ध उनकी भारतीय राष्ट्रीयता जबरन छीन ली गई और उन्हें निःशस्त्र एवं असहाय अवस्था में निर्दयी तथा हिंसक पाकिस्तानियों के सामने छोड़ दिया गया।

''मैं अपने देशवासियों से कहूँगा कि वे अपना क्षोभ संयम से प्रकट करें। शांति भंग हो या हमारी सरकार के मार्ग में कुछ बाधाएँ खड़ी हों, ऐसा वे कुछ भी न करें। सरकार से भी यह कहना मैं अपना कर्तव्य समझता हूँ कि वह गणराज्य के नागरिकों की पुकार सुनकर, उन पर विश्वास रखकर, जनता और शासन का संयुक्त कार्यक्रम बनाकर, राजनैतिक पक्षोपपक्ष से ऊपर उठकर ऐसी शक्तिशाली एकता पैदा करे, जिससे देश की स्वतंत्रता और मानमर्यादा की रक्षा हो।''[१]

इस आत्मीयतायुक्त वक्तव्य को भारत के सभी प्रमुख समाचार पत्रों ने प्रकाशित किया।

द्वितीय वक्तव्य (नागपुरः १४ मार्च १९५०)

तत्पश्चात् नागपुर पहुँचने पर दिनांक १४ मार्च को श्रीगुरुजी ने इसी आशय का एक द्वितीय वक्तव्य प्रकाशित किया।[२]

सरदार पटेल को पत्र व भेंट

दिनांक ५ अप्रैल १९५० को सरदार पटेल को इस बारे में लिखे पत्र में श्री गुरुजी कहते हैं, ''आज के समान स्थिति में मेरी तथा संघ की नीति सदा स्पष्ट रही है। अपने देश में किसी भी प्रकार शांति भंग होना अनिष्टकारक है। परिस्थिति का लाभ उठाकर सरकार के विरुद्ध भावनाएँ फैलाना भी अनुचित है। यही हम लोगों की नीति है तथा इसी के अनुसार हम शांतिपूर्वक पीड़ितों की सेवा का कार्य कर रहे हैं।''[३]

तत्पश्चात् १२ अप्रैल को दिल्ली आने पर, उसी दिन दोपहर में सरदार पटेल से भेंट कर श्री गुरुजी ने उन्हें 'वास्तुहारा सहायता समिति' तथा उसके कार्य से अवगत कराया। सरदार पटेल ने सहायता कार्य पर समाधान प्रकट करते हुए बंगाल में संघ कार्य की निरन्तर वृद्धि के बारे में अपनी शुभ इच्छा व्यक्त की।

असम का भूकम्प

वास्तुहारा सहायता समिति का कार्य जारी था कि असम में भयंकर भूकम्प आ गया। १५ अगस्त १९५० को हुए इस भीषण प्रकोप से सर्वत्र त्राहि-त्राहि मच गई। स्वयंसेवकों ने स्वयं स्फूर्ति से आगे आकर सहायता तथा सेवा कार्य प्रारम्भ किया। न्यायमूर्ति कामाख्या राम बरुआ की अध्यक्षता में 'भूकम्प पीड़ित सहायता समिति' की स्थापना डिब्रूगढ़ में की गई। श्री गुरुजी ने पत्र भेजकर स्वयंसेवकों को अपनी सम्पूर्ण शक्ति जुटाकर पीड़ितों की सेवा करने की प्रेरणा दी।

राष्ट्रीय विपत्ति

सितम्बर मास के अन्त में समिति के कार्य के अवलोकनार्थ श्री गुरुजी स्वयं असम गए। समस्त असमवासियों को उन्होंने यह संदेश दिया कि संगठित और अनुशासित होने से हम इस प्रकार के संकटों का

---

१. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड १०, पृष्ठ २३८-४०.
२. वही, पृष्ठ २३८-४०.
३.श्री गुरुजी व्यक्ति और कार्य, ना.ह.पालकर, डॉ. हेडगेवार भवन, नागपुर, पृष्ठ - २३६.

भी सफलतापूर्वक सामना कर सकेंगे। इस अवसर पर उन्होंने एक विशेष वक्तव्य भी दिया जिसमें कहा गया था, ''भूकम्प से जीवन और सम्पत्ति की भयंकर क्षति हुई है। सरकारी और गैर सरकारी संस्थाओं ने सहायता कार्य आरम्भ किया है। मुझे यह जानकर प्रसन्नता हुई है कि सर्वप्रथम संगठित रूप से सहायता करने वाली रा.स्व.संघ की असम शाखा थी। उसके द्वारा प्रारम्भ की गई 'असम पीड़ित सहायता समिति' भूकम्प पीड़ित और बाढ़ पीड़ितों को अच्छी तरह सहायता पहुँचा रही है।

''समस्या की विशालता को देखते हुए जो कुछ भी हुआ है या हो रहा है, अत्यन्त अल्प है। यह स्थानीय नहीं अपितु एक राष्ट्रीय विपत्ति है। ऐसी आपदाएँ ही राष्ट्रीय एकता तथा लोगों के सेवा भाव की कसौटी होती हैं। मैं भारतवासियों से अभ्यर्थना करता हूँ कि वे चल रहे सहायता कार्य के निमित्त उदारता पूर्वक धन-वस्त्र आदि देकर असम की सहायता करें। सरकार ने भी पीड़ितों की सहायता करना शुरु किया है। मैं आशा करता हूँ कि सेना की सक्षम सेवाओं को प्रत्यक्ष कार्य में लगाते हुए सरकार शीघ्रता से और भी अधिक प्रभावी कदम उठाएगी।''[१]

इसी प्रकार १९५१ में बिहार में और १९५२ में आन्ध्र प्रांत के रायलसीमा भाग व महाराष्ट्र प्रांत के शोलापुर, नगर, धूलिया, जलगाँव तथा सातारा आदि ज़िलों में पड़े अकाल के समय सेवा और सहायता के अपने दायित्व को स्वयंसेवकों ने उत्तम रीति से पूर्ण किया।

बिहार-बंगाल व असम की बाढ़

सन् १९५४ में बिहार, बंगाल व असम की बाढ़ से प्रभावित लोगों की सहायता हेतु स्वयंसेवकों ने घर-घर जाकर खाद्यान्न, कपड़े व धन एकत्र किया। समाज व सरकार से सहयोग का निवेदन करते हुए श्री गुरुजी ने अपने एक वक्तव्य में कहा, ''बाढ़ के कारण बिहार, बंगाल व असम में लाखों लोग बेघर हो गए हैं। गाँव जलमग्न हो गए हैं। फसलें नष्ट हो गई हैं। कल्पनातीत कष्टकारक दृश्य उपस्थित हुआ है। पीड़ितों

की सहायता करना अपना दायित्व है। बिहार में राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ ने एक समिति का गठन किया है जिसने सहयोग के लिए सभी से प्रार्थना की है।

''सरकार ने भी बाढ़ पीड़ितों की पीड़ा-शमन के लिए बहुत कुछ करने का संकल्प किया है। जनता के सहयोग से ऐसा सेवा कार्य उत्तम रीति से सम्पन्न होता है। अतः मैं सरकार से अनुरोध करना चाहूँगा

---

१. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड १०, पृष्ठ २४३-४४.

कि वह राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तथा अन्य संगठनों के कार्यकर्ताओं का, सेवा ही जिनका आदर्श है, सहायता कार्यों को प्रभावी बनाने में सहयोग प्राप्त करे।''१

बाबू जयप्रकाश नारायण की टिप्पणी

बिहार के अधिकांश भागों में सन १९६६ में भयंकर अकाल पड़ा। संकट की उस घड़ी में हज़ारों स्वयंसेवकों ने दिन-रात काम करके बिहार के अकाल-पीड़ितों में सहायता-सामग्री का वितरण किया। समूचे सहायता कार्य के प्रभारी श्री जयप्रकाश नारायण ने स्वयंसेवकों के कार्य को निकटता से देखा। उन्होंने देखा कि सहायता देते समय हिन्दू-मुस्लिम का कोई भेदभाव नहीं बरता गया। स्वयंसेवक तो अपनी गाँठ का पैसा भी खर्च कर रहे थे। वे सहायता के पात्र लोगों की सेवा के लिए पैदल ही दुर्गम स्थानों तक पहुँच जाते थे। दि. ६ फरवरी १९६७ को एक ऐसे ही अकाल पीड़ित सहायता केन्द्र का उद्घाटन करते हुए श्री जयप्रकाश नारायण ने कहा था, ''संघ के स्वयंसेवकों की निःस्वार्थ सेवा की बराबरी कोई नहीं कर सकता, देश का प्रधानमन्त्री भी नहीं।''२

युद्धरत भारत

श्री गुरुजी 'युद्ध एक दैवी विधान' नामक लेख में लिखते हैं, ''इसे दुर्भाग्य मानें या सौभाग्य पर वस्तुस्थिति यह है कि इस जगत् में जो बलवान् है वह निर्बल पर आक्रमण किए बिना नहीं रहता। पंचशील और सहअस्तित्व के हम चाहें जितने भी नारे लगाएँ पर दुर्बल और बलवान् के बीच सह-अस्तित्व की रम्य कल्पना सत्य सृष्टि में आज तक तो परिणत नहीं की जा सकी। हमारे पूर्वजों ने मनुष्य स्वभाव के दोष को ध्यान में रखते हुए कहा कि संसार में संघर्ष अटल है। वे कल्पना जगत् में विचरण करने वाले लोग नहीं थे। जीवन के कठोर तथ्यों का विचार और अनुभव कर उन्होंने कहा कि 'जीवो जीवस्य जीवनम्' का न्याय अटल है। इसलिए जो व्यक्ति या राष्ट्र स्वयं को जीवित रखना चाहता है उसे स्वयं बलवान् बनकर खड़ा रहना चाहिए जिससे कोई दूसरा उसे भक्ष्य बनाने का दुस्साहस न कर सके''३

---

१. आर्गेनाइज़र, २०.६.१९५४, पृष्ठ-२.
२. कृतिरूप संघ दर्शन, पृष्ठ २४०-४१.
३. युद्ध एक दैवी विधान, मा.स.गोलवलकर, पांचजन्य, दीपावली अंक, १५.१२.१९६३, पृष्ठ-२५

चीन-भारत युद्ध

संघ के केन्द्रीय कार्यकारी मण्डल के दिसम्बर १९६२ के प्रस्ताव में कहा गया है, ''सन १९६२ के अक्तूबर मास में लद्दाख और उत्तर-पूर्व-सीमान्त क्षेत्र में कम्युनिस्ट चीन के व्यापक और भारी आक्रमण ने शत्रु के मन्तव्यों को स्पष्ट कर दिया। वस्तुतः सन १९४९ में चीन में कम्युनिस्ट शासन स्थापित होने के बाद ही उसके भारत विरोधी मन्सूबे प्रकट हो गए थे। तभी से सम्पूर्ण एशिया खण्ड में साम्यवादी शासन लाने

और उसके नेतृत्व की महत्त्वाकाँक्षा लेकर चीन के कम्युनिस्ट शासकों ने बीते पिछले १३ वर्षों में विस्तारवादी नीति अपनायी। मित्रता और विरोध, शान्ति की चर्चा और युद्ध इस नीति के ही प्रसंगानुसार पहलू रहे।''१

इतिहास दोहरा रहा है

दिनांक १८.५.१९५६ को 'पांचजन्य' साप्ताहिक में प्रकाशित लेख ''कम्युनिस्ट 'मुक्ति' का शिकार तिब्बत,'' में श्री गुरुजी कहते हैं,''लगता है, इतिहास अपने को दोहरा रहा है। यह सब मानव की लिप्सा, विस्तारवृत्ति और निरंकुशता का ही नया रूप है, जो आज तिब्बत में खुलकर मृत्यु का ताण्डव रच रहा है। तिब्बत में चीनी विजय पर खुशियाँ मनाने वालों के लिए तथा अपने इस देश में भी इसी प्रकार की 'मुक्ति' का स्वप्न देखने वालों के लिए इतिहास का यह सबक है।''२

भविष्यदर्शी

राजस्थान के तत्कालीन प्रान्त प्रचारक श्री ब्रह्मदेव शर्मा अपने संस्मरण में कहते हैं कि ''सन १९६२ में राजस्थान के प्रवास पर जब श्री गुरुजी आए तो चित्तौड़ में उनका सार्वजनिक कार्यक्रम था। अपने भाषण में श्री गुरुजी ने यह रहस्योद्घाटन किया– 'मेरे पास पक्की जानकारी है कि चीन भारत पर आक्रमण करनेवाला है। हमारे देश के नेता तो 'हिन्दी–चीनी भाई–भाई के नारे लगा रहे हैं और दिल्ली के लाल किले में चीन के प्रधानमन्त्री का स्वागत कर रहे हैं, पर चीन आक्रमण करेगा।' दो दिन बाद यही बात उन्होंने अलवर के भाषण में भी दोहरायी। दोनों जगह ही श्री गुरुजी के भाषण की तीव्र प्रतिक्रिया हुई और दैवयोग से अगले ही दिन आकाशवाणी ने देश को यह समाचार देकर स्तब्भित कर दिया कि चीन की सेनाओं ने भारत पर आक्रमण कर दिया है।''३

---

१. चीनी आक्रमण पर स्वीकृत वक्तव्य (के.का.मण्डल, दिसम्बर १९६२).संकल्प, सुरुचि प्रकाशन, पृष्ठ ९७–९८.
२. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड ६, पृष्ठ–७५.
३. श्री गुरुजी जीवन प्रसंग भाग–१, पृष्ठ २४८–४९.

चीन की आँख लद्दाख पर

श्री गुरुजी ने सन १९६० के जनवरी–फरवरी माह में सम्पूर्ण महाराष्ट्र का दौरा सदैव के अनुसार करते हुए पत्रकारों के कुछ प्रश्नों का समाधान किया। दिनांक २ फरवरी १९६० को मुम्बई में हुए पत्रकारों के साथ चीनी आक्रमण से सम्बन्धित वार्तालाप में वे कहते हैं, ''मुझे तो चीनी आक्रमण का समाचार ४–५ वर्ष पूर्व ही प्राप्त हो गया था। उस समय मैंने सार्वजनिक भाषणों में उसका उल्लेख भी किया था। उस समय कोलकाता के एक दैनिक पत्र के सम्पादक ने लिखा था कि 'ये गैर ज़िम्मेदारी से ऐसी बातें करते हैं। यदि ऐसा होता तो क्या सरकार को यह पता नहीं लगता।' अब आक्रमण का समाचार आने पर उसने कहा कि आपका कहना ही ठीक था। दुःख की बात यह है कि आज भी यह आक्रमण जारी है।

भारत सरकार की उदासीनता

इसी वार्तालाप मे श्री गुरुजी आगे कहते हैं, ''दुर्दैव की बात तो यह है कि भारत ने प्रारम्भ में ही तिब्बत पर चीन का प्रभुत्त्व स्वीकार करके भारी गलती की है। अंग्रेजों ने तो संधि करके वहाँ पर अपनी सेना भी रखी थी। हम लोगों ने ही उसे वापस बुला लिया। प्रारम्भ में ही यदि ठीक प्रकार से बात की जाती तो सेना हटाने की नौबत न आती। इसीलिए आचार्य कृपलानी ने कहा कि 'तिब्बत पर किए गए बलात्कार जैसे जघन्य पाप में से पंचशील का जन्म हुआ है!' यह ठीक है।

''वस्तुतः अपनी भारत सरकार पहले से ही सीमा के प्रश्न पर उदासीन रही है, इसलिए यह सब हो रहा है। अपनी सीमाओं के सम्बन्ध में हमें सजग रहना होगा। इसके विपरीत अपने प्रधानमन्त्री कहते हैं कि 'नाट ए ब्लेड आफ ग्रास ग्रोज़ देअर' (वहाँ तो घास का तिनका तक नहीं उपजता), सब कुछ बर्फमय ही है इत्यादि। अपनी ही सीमा के सम्बन्ध मे ये उद्‌गार कितने दुःखद हैं। स्वदेश की एक इंच भूमि के बारे में भी इस प्रकार की बातचीत करना अनुचित है। यह तो प्रत्यक्ष अपमान है।''[१]

अभेद्य शक्ति के रूप मे खड़े हों

चीन के साथ सन १९६२ में प्रत्यक्ष युद्ध छिड़ जाने पर सब नागरिकों को और विशेष रूप से स्वयंसेवकों को, युद्ध जीतने के लिए शासन के सब प्रयत्नों में कन्धे से कन्धा मिलाकर प्रयत्नशील रहने का आवाहन, श्री गुरुजी ने दिनांक २९.१०.१९६२ के अपने वक्तव्य में किया। इसमें वे कहते हैं, ''अब प्रबल

---

१. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड १०, पृष्ठ १४७-५३.

शत्रु देश की सीमा में घुस आया है। अब सभी राष्ट्रभक्तों को छोटे-मोटे आपसी मतभेद भुलाकर, कन्धे से कन्धा लगाकर एक अभेद्य शक्ति के रूप में खड़ा होना अनिवार्य है। शासन के आवाहन पर सक्षम शरीर के सब व्यक्तियों को सेना के विभिन्न भागों में काम करने के लिए पर्याप्त संख्या में तत्परता से आने के लिए सिद्ध रहना भी आवश्यक है। जनता को नैतिक दबाव से तथा शासन को अपनी शक्ति से, श्रम का शोषण न हो, श्रमिक सन्तुष्ट रहकर सोत्साह काम में जुटे रहें, इस हेतु अतीव सतर्कता बरतनी चाहिए। विध्वंसक कार्यवाहियाँ भी होने की सम्भावना है, अतः ग्राम-ग्राम में, नगरों के हर मोहल्ले में स्वयंस्फूर्ति से संगठित होकर अहोरात्र इस ओर ध्यान देना, शांति तथा सुव्यवस्था बनाए रखना सब का कर्तव्य है।''[१]

तिब्बत की मुक्ति आवश्यक

तिब्बत की मुक्ति और नेपाल से मधुर सम्बन्धों की आवश्यकता हेतु विदेश नीति में सुयोग्य परिवर्तन का निर्देश करते हुए नागपुर से दिए गए दि. ५ नवम्बर, १९६२ के वक्तव्य में श्री गुरुजी बतलाते हैं, ''अब जब कि चीन ने पंचशील संधि को अस्वीकृत कर दिया है और वह हमारी सीमाओं का अतिक्रमण कर रहा है, हमें तिब्बत को स्वाधीन कराने का प्रयास करना चाहिए। पाकिस्तान वर्तमान संकट पूर्ण स्थिति से लाभ उठाने की सोच सकता है और मुझे इसमें संशय है कि अमेरिका उसे नियन्त्रित कर सकेगा। नेपाल के साथ शीघ्रातिशीघ्र मधुर एवं प्रगाढ़ सम्बन्ध प्रस्थापित करना भारत सरकार के लिए आवश्यक है। नेपाल नरेश के साथ सौहार्दपूर्ण सम्बन्ध प्रस्थापित करना कठिन नहीं है। अन्ततः वे हमारे अपने अंश हैं। हिन्दू होने के कारण उन की जड़ें यहीं हैं। यदि हम इसमें विफल रहे तो हमारी कठिनाइयाँ और बढ़ेंगी।''[२]

त्याग और शौर्य की गाथा

आक्रमण के समय जब चीनी सेनाएँ अरुणाचल प्रदेश में बोमडिला पार कर चारद्वार तथा मिसामारी की ओर बढ़ने लगीं तो तेजपुर के पूरे प्रशासनतन्त्र का मनोबल टूट गया। जिलाधीश आदि कुछ उच्च पदस्थ अधिकारी जनता को शहर छोड़ने की सलाह दे स्वयं भाग खड़े हुए। जेल तथा पागलखाने के दरवाज़े खोल दिए गए तथा स्टेट बैंक के नोट के बंडल जलाए और सिक्के व चिल्हर तालाब में फेंके जाने लगे। असम

१. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड १०, पृष्ठ १५३-५६.
१. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड १०, पृष्ठ १५६-५९.

के तत्कालीन राजस्व मन्त्री श्री फखरुद्दीन अली अहमद ने एन.सी.सी. के जवानों के सामने असहाय स्थिति प्रकट की और बिजली घर को डायनामाइट से उड़ा देने का आदेश भी दे दिया। उसी रात आकाशवाणी पर पं. जवाहरलाल नेहरू के मुख से ये दुर्भाग्यपूर्ण उद्‌गार निकले कि 'मेरा हृदय तो असम के लोगों के साथ पीछे छूटा जा रहा है' अर्थात् 'असम अब अपने हाथों से निकल रहा है।' संदेश मुखर और स्पष्ट था कि भारत ने हर हालत में असम को बचाने की अपनी ज़िम्मेवारी से मुँह मोड़ लिया है और वहाँ की जनता को शत्रु की दया पर खुला छोड़ दिया है।

बलिहारी है कानू डेका, पद्‌मप्रसाद दास तथा पद्‌मजाकान्त सेनापति नाम के संघ के स्वयंसेवक व उनके कुछ अन्य साथियों की जिन्होंने युवकों की एक टोली गठित कर सेना के अधिकारियों से सम्पर्क किया तथा उनकी सहायता से रात दिन पहरेदारी कर खाली हुए घरों को पूर्व पाकिस्तानी (बांग्लादेशी) घुसपैठियों के हाथों लुटने से बचाया। यही नहीं, तालाब में फैंकी हुई सम्पत्ति को बटोरने के लिए बैलगाड़ियाँ लेकर आ रहे अराष्ट्रीय तत्त्वों से भी धन की रक्षा करवाई। दूसरी ओर सर्वश्री पूर्णनारायणसिंह, डॉ.दास, हरकान्त दास, विश्वदेव शर्मा तथा नगराध्यक्ष दुलाल भट्‌टाचार्य आदि लोगों ने एक समिति गठित कर यह निश्चय किया कि वे हार नहीं मानेंगे और समानान्तर सरकार गठित कर नेतृत्व प्रदान करेंगे।[1]

किन्तु थोड़े समय के बाद चीन द्वारा एकतरफा युद्ध बंदी घोषित कर देने से परिस्थिति सामान्य हो गई।

गणतन्त्र दिवस समारोह का प्रमुख आकर्षण

श्री गुरुजी के मार्गदर्शन के परिप्रेक्ष्य में स्वयंसेवक असम के अतिरिक्त अन्यत्र भी तुरन्त मैदान में कूद पड़े। वे सामान्यतः सरकारी प्रयासों के लिए और विशेषतः सेना के जवानों के लिए जी जान से समर्थन जुटाने लगे। पंडित नेहरू तो इस कार्य से इतने गद्‌गद् हुए कि उन्होंने २६ जनवरी १९६३ के गणतन्त्रदिवस समारोह में सम्मिलित होने के लिए संघ को आमन्त्रित किया। आमन्त्रण केवल दो दिन पहले मिला था। फिर भी परेड में ३००० से भी अधिक स्वयंसेवकों ने अपने पूरे गणवेष में स्फूर्तिपूर्वक भाग लिया। उनका विशाल एवं भव्य पथ-संचलन तो वास्तव में कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण बन गया। जब बाद में कुछ कांग्रेसियों ने

१. नवयुग प्रवर्तक श्री गुरुजी, पृष्ठ १९०-९१.

संघ को दिए गए आमन्त्रण पर आपत्ति की तो पंडित नेहरू ने उस आपत्ति को यह कह कर उड़ा दिया कि समस्त देशभक्त नागरिकों को परेड में भाग लेने का आमन्त्रण दिया गया था।[1]

सम्पूर्ण विजय का संकल्प

दिनांक २३ दिसम्बर १९६२ को दिल्ली के रामलीला मैदान में एक जनसभा में भाषण देते हुए श्री गुरुजी ने कहा, ''कुछ लोग कहते हैं कि पं. नेहरू के हाथ मज़बूत करो। परन्तु आज सच्ची आवश्यकता पं. नेहरू के हाथ व हृदय दोनों मज़बूत करने की है। उनके हृदय में यह संकल्प बने कि राष्ट्र के प्रजातांत्रिक जीवन और सम्पूर्ण मातृभूमि की, स्थिर सुरक्षा के लिए जितना भी युद्ध आवश्यक है, अवश्य करेंगे। अब, जब कि हम चीन के बारे में अपनी मिथ्या कल्पनाएँ छोड़ रहे हैं, तो तिब्बत की स्वतन्त्रता की घोषणा करें। दलाई लामा की सरकार की मदद करें, तो शत्रु को भारतीय सीमा में ही नहीं वरन् तिब्बत की उत्तरी सीमा में उस पार धकेलने में अवश्य सफलता मिलेगी। इसी प्रकार से चीन को नियमित व संचालित

किया जा सकता है। बुद्धिमत्ता, सतर्कता व सतत् तत्परता का परिचय देते हुए पूर्ण विजय का संकल्प करें।''२

भारत-पाक युद्ध (१९६५)

सन १९६५ में जब भारत-पाक युद्ध प्रारम्भ हुआ तब श्री लाल बहादुर शास्त्री भारत के प्रधानमन्त्री थे। उन्होंने स्वयं श्री गुरुजी को दूरभाष करके अनुरोध किया कि वे अगले दिन दिल्ली में होने वाली सर्वपक्षीय मंत्रणा समिति की बैठक में भाग लें। श्री गुरुजी उस समय प्रवास के निमित्त सांगली (महाराष्ट्र) में थे। वे तुरन्त दिल्ली पहुँचे। इस बैठक में श्री गुरुजी ने कौन सी भूमिका निभायी इसका सार्वजनिक प्रकटीकरण उन्होंने पहली बार दिनांक ८.२.१९७० को नागपुर में हुए विभिन्न क्षेत्रों में कार्यरत प्रमुख स्वयंसेवकों के एकत्रीकरण में किया।

आक्रामक भूमिका हो

श्री गुरुजी ने कहा, ''इस बैठक में एक सज्जन ने युद्ध का हेतु स्पष्ट करने का अनुरोध किया- (लेट अस डिफाईन अवर वार एम्स)। एक नेता तो बार-बार 'युवर आर्मी' (आपकी सेना) शब्द का प्रयोग कर रहे थे। मैंने हर बार उन्हें रोक कर सुझाया - 'अवर आर्मी' (अपनी सेना) कहिए। किन्तु जब तीसरी

१. कृतिरूप संघ दर्शन, पृष्ठ-२८.

२. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड १०, पृष्ठ १५६-८१.

बार भी उन्होंने वही बात दोहराई तो मैंने उनसे कहा कि 'आप यह क्या बोल रहे हैं?'' तब उन्हें अपनी गलती का अनुभव हुआ और उन्होंने 'अवर आर्मी' कह कर गलती को सुधरा।

''इस बैठक में मैंने कहा कि हमारा 'एम' (उद्देश्य) बिल्कुल स्पष्ट है। वह है, युद्ध में अपने सम्मान की रक्षा करते हुए आक्रमणकारी को उचित पाठ पढ़ाकर विजय-सम्पादन करना।''१

विजय सुनिश्चित है

नई दिल्ली से दिनांक ८.९.१९६५ को दिए गए वक्तव्य में श्री गुरुजी कहते है, ''पाकिस्तान के आक्रमण के परिणामस्वरूप हमारे देश पर थोपा हुआ युद्ध गंभीर संघर्ष का रूप धारण करता जा रहा है। हम सब को परिस्थिति की चुनौती को स्वीकार करना होगा तथा दृढ़ता और धैर्यपूर्वक चलकर पूर्ण सफलता प्राप्त करनी होगी। अतः मैं सभी देशवासियों तथा विशेषतः राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के स्वयंसेवक बन्धुओं का आवाहन करता हूँ कि वे जो-जो समस्याएँ पैदा हों, उनको दूर करने में सरकार का पूरा सहयोग करें। हम सत्य के लिए तथा अपनी मातृभूमि की अखण्डता और सम्मान के लिए लड़ रहे हैं। हमारी विजय सुनिश्चित है।''२

अणुबम बनाना अत्यावश्यक

अणुबम निर्माण के संबंध में श्री गुरुजी कहते हैं, ''सरकार को चाहिए कि सभी उद्योगपतियों, वैज्ञानिकों और तकनीकी विशेषज्ञों का आवाहन् करे तथा उनके सहयोग से यथाशीघ्र ऐसे आयुधों का निर्माण करे जो शत्रु के प्राप्त होने वाले आयुधों से श्रेष्ठतर हों। कम्युनिस्ट चीन के पास अणुबम होने से उसका बनाना हमारे लिए भी अत्यावश्यक हो गया है। यह हमारी अंतिम विजय की प्राप्ति की क्षमता के संबंध में जनता तथा सेना के मस्तिष्क में विश्वास उत्पन्न करेगा। सिद्धांत एवं तात्त्विक निषेधों को बाधास्वरूप इसके मार्ग में नहीं आने देना चाहिए।''३

भारतीय क्षात्रवृत्ति का आदर्श

आकाशवाणी वड़ोदरा (बड़ोदा) ने दिनांक १६.६.१६६५ को श्री गुरुजी का नभ-संदेश प्रसारित किया जिस में कहा गया था, ''युद्ध के अभी तक के परिणाम अपनी सेना के लिए शोभादायक हैं। उसी की कीर्ति अधिकाधिक उज्ज्वल हुई है। जिस-जिस भाग पर उसका स्वामित्व स्थापित होता जा रहा है, वहाँ के

---

१. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड १०, पृष्ठ २०७-०८.
२. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड १०, पृष्ठ -१८५.
३. विचार नवनीत, मा.स. गोलवलकर, ज्ञान गंगा प्रकाशन, जयपुर, पृष्ठ-३२४.

नागरिकों (खुद को पाकिस्तानी भले ही कहते हों) के साथ प्रेमपूर्ण पद्धति से व्यवहार करके आश्वासन देने की नीति अपने भारत की सच्ची क्षात्रवृत्ति की परम्परा को शोभा देने वाली है तथा संसार के अन्य देशों की दृष्टि से अपने देश को गौरवान्वित करने वाली है।''[१]

वीर गति को विनम्र गौरवांजलि

संघ के केन्द्रीय कार्यकारी मण्डल ने, अक्तूबर, १६६५ की श्री गुरुजी की उपस्थिति में हुई अपनी बैठक में भारत-पाक युद्ध से सम्बन्धित तीन प्रस्ताव पारित किए। उनमें से पहले प्रस्ताव- 'वीर-गति को गौरवांजलि, राष्ट्र रक्षा में सन्नद्धता का अभिनन्दन' में कहा गया था, ''पाकिस्तान के आक्रमण से उत्पन्न परिस्थिति का जिस प्रकार भारत की जनता, सरकार और सेना ने सामना किया है, वह हमारे स्वातन्त्र्योत्तर काल के इतिहास में एक नया और गौरवपूर्ण अध्याय है। इस संदर्भ में हमारे जवानों और अफसरों ने अतुलनीय पराक्रम, असामान्य साहस तथा उच्चकोटि की रणनीति का परिचय दिया है। फलतः पाकिस्तान के पास अधिक अच्छे शस्त्रास्त्र होते हुए भी विजयश्री हमारे हाथ लगी। राष्ट्र को अपने सैनिकों पर गर्व है। रणभूमि में जिन योद्धाओं ने वीरगति प्राप्त की, उनको हम अपनी विनम्र गौरवांजलि अर्पित करते हैं''[२]

पाक-आक्रमण के पीड़ितों की सहायता

केन्द्रीय कार्यकारी मण्डल का दूसरा प्रस्ताव भारत की पाकिस्तान-नीति और राष्ट्रीय सुरक्षा से सम्बन्धित था। मण्डल द्वारा पारित तीसरे प्रस्ताव में कहा गया था, ''पाकिस्तान के साथ युद्ध में सैनिक और अन्य शासकीय कर्मचारियों के अतिरिक्त असैनिक नागरिक भी हताहत हुए हैं। युद्ध के नियमों का उल्लंघन कर पाकिस्तान ने बस्तियों पर जो बम वर्षा की उससे जन-धन की हानि हुई है। सीमान्त क्षेत्र में अनेक परिवार उद्ध्वस्त हुए हैं। हमारा शासन से अनुरोध है कि इन सब की योग्य व्यवस्था हेतु उपयुक्त योजना अविलम्ब कार्यान्वित करे। हम सभी समाजसेवी संगठनों से अनुरोध करते हैं कि वे शासन को इस आवश्यक कर्तव्यपूर्ति में सभी प्रकार की सहायता दें।''[३]

सीमावर्ती विस्थापित नागरिकों को तुरन्त सहायता पहुँचाने हेतु मुम्बई से दिनांक १८.११.१६६५ को दिए वक्तव्य में श्री गुरुजी ने कहा ''युद्ध की स्थिति का सामना करने के लिए शासन, सैनिक तथा समाज

---

१. गुजराती पुस्तिका 'आज नो धर्म' (प.पू. श्री गुरुजी गुजरात मां),मधु प्रकाशन, सूरत, पृष्ठ ३-५.
२. संकल्प, सुरुचि प्रकाशन, नई दिल्ली, पृष्ठ- २१.
३. वही, पृष्ठ-१६६.

तीनों सिद्ध हुए हैं। प्रत्यक्ष युद्ध में लड़ने वाले सैनिकों तथा उनके कुटुम्बियों को आवश्यक सहायता पहुँचाने के लिए समाज ने जो तत्परता दिखाई है वह अभिनन्दनीय है। किन्तु इस युद्ध के कारण सीमावर्ती नागरिकों को बहुत ही कष्ट उठाने पड़े हैं। इस समय उनकी सब प्रकार से सहायता करने के लिए शीघ्र आगे आना हम सबका परम कर्त्तव्य है।''१

संघ, विपत्ति में काम आनेवाला मित्र

युद्ध की समूची अवधि (२२ दिन) में दिल्ली में यातायात-नियन्त्रण जैसा पुलिस कर्म स्वयंसेवकों को सौंप दिया गया ताकि पुलिस और अधिक आवश्यक कार्य कर सके। सेना की दृष्टि में संघ, विपत्ति में काम आने वाला मित्र था। जब भी वह किसी प्रकार की नागरिक सहायता की अपेक्षा अनुभव करती तो झट दिल्ली संघ-कार्यालय को फोन कर देती। आवश्यकता पड़ने पर जब एक सेना अधिकारी ने एक मध्यरात्रि को फोन किया तो अगले दिन प्रातः ५०० स्वयंसेवक रक्तदान के लिए मिलिटरी अस्पताल पहुँच गए। अस्पताल के नियमानुसार रक्तदान के बाद हर स्वयंसेवक को दस रुपए दिए गए, परन्तु स्वयंसेवकों ने रुपए लौटाते हुए कहा कि उनका सदुपयोग घायल जवानों के लिए किया जाए। अमृतसर के संघ स्वयंसेवकों के सीमा के ऐसे क्षेत्र में चार कैन्टीनें खोलीं जहाँ शत्रु का तोपखाना गोले बरसाता था।

जम्मू में जब लाखों की संख्या में विस्थापितों की बाढ़ सी आ गई तो संघ द्वारा प्रायोजित सहायता समिति सबसे आगे थी। १५ अगस्त से ६ सितम्बर तक उसने प्रतिदिन लगभग २५ से ३५ हज़ार तक लोगों के भोजन की व्यवस्था की और उनकी सभी दैनिक आवश्यकताओं को पूरा किया।

गुजरात में भी द्वारिका के निकट ओखा में कार्यरत एक संघ स्वयंसेवक ने दो सैबर जेट विमानों को मार गिराया। वे विमान बन्दरगाह पर बमबारी करने के लिए नीची उड़ान भर रहे थे। सेना के जवानों ने उसकी भूरि-भूरि प्रशंसा की तो उसने सच्चे स्वयंसेवक की भाँति कहा, ''मैंने तो केवल अपने कर्तव्य का पालन किया है।''

जब युद्ध समाप्त हुआ तो जनरल कुलवन्त सिंह ने एक संघ कार्यकर्ता से कहा, ''पंजाब भारत की रक्षक भुजा है और रा.स्व.संघ पंजाब की।''२

---

१. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड १०, पृष्ठ २०४-०५.
२. कृतिरुप संघ दर्शन, पृष्ठ ३०-३२.

वज्रादपि कठोराणि मृदूनि कुसुमादपि

सन १९४७ के पश्चात् पाकिस्तान ने अनेक अन्याय किए। पूर्व बंगाल के हिन्दुओं के साथ निर्घृण व्यवहार, काश्मीर के अंश को व्याप्त करना, दो बार कच्छ के रण में आक्रमण, युद्ध-विराम घोषणा के पश्चात् भी चला हुआ आक्रमण तथा भारतीय भूभाग का अपहरण, इन सब का निराकरण तथा इतने वर्षों में भारत को जो हानि उठानी पड़ी उसकी पूर्ति, यह सब युद्ध के परिणामस्वरूप हो ऐसा श्री गुरुजी का दृष्टिकोण था। सन १९६५ के अक्तूबर में जम्मू में (दि.१२), अमृतसर (दि.१३), लुधियाना (दि.१४) और अम्बाला (दि.१५) आदि स्थानों पर दिए गए सार्वजनिक भाषणों में उन्होंने इन्हीं विचारों का समर्थन किया। अपने भाषणों में उन्होंने यह भी कहा कि जो अभी लड़ाई हुई उससे लोगों की समझ में आ गया है कि बिल्कुल शांत और चुपचाप बैठा हुआ, बहुत ही नम्रता से व्यवहार करने वाला यह जो हिन्दू समाज है, वह जितना नम्र उतना कठोर भी है।७

ताशकन्द वार्ता भूल सिद्ध होगी

दिनांक १२.१२.१९६५ को 'आर्गेनाइज़र' को दी गई एक विशेष भेंट में श्री गुरुजी ने कहा, ''मेरे मतानुसार प्रधानमन्त्री के लिए ताशकन्द न जाना ही उचित होगा, क्योंकि आक्रान्ता और आक्रान्त को समान धरातल पर रखकर दोनों को ही वार्ता के लिए आमन्त्रण दिया गया है। ताशकन्द वार्ता से यदि कोई परिणाम निकला तो वह भारतवर्ष के राष्ट्रीय हितों के लिए अत्यधिक घातक होगा। पाकिस्तान अभी भी आक्रामक दृष्टिकोण बनाए हुए है। इसलिए बृहत् परिमाण पर पुनः युद्ध अवश्य होगा।''२

शरणार्थियों की क्षतिपूर्ति

ताशकन्द घोषणा के (समझौते) पश्चात् उसके बारे में 'आर्गेनाइज़र' के विशेष संवाददाता से दिनांक १६.१.१९६६ को हुई बातचीत में श्री गुरुजी ने कहा, ''पाकिस्तान के साथ बचे विषयों का एक साथ निपटारा कर लेना चाहिए। सन १९४७ के बाद जितने मुसलमान भारत से पाकिस्तान में गए हैं, उससे दुगुनी संख्या में हिन्दू यहाँ पर आए हैं। पाकिस्तान को इनकी सम्पत्ति की क्षतिपूर्ति करनी चाहिए। संयुक्त भारत सार्वजनिक ऋण के अपने हिस्से से भी पाकिस्तान अभी उऋण नहीं हुआ है। यदि विधिसंगत देय

---

१. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड १०, पृष्ठ १९०-२०२.
२. आर्गेनाइज़र, १२.१२.१९६५, पृष्ठ १-२.

को देने में वह (पाकिस्तान) असमर्थ है तो इसके बदले में उसे भूमि देनी चाहिए। गत अगस्त, सितम्बर में पाकिस्तान ने हमारे ऊपर आक्रमण किया। हमारे नित्य प्रति खर्च लगभग २५ करोड़ रुपए की 'भरपाई' पाकिस्तान को करनी चाहिए।''१

हाज़ीपीर से सेना हटने के पीछे रूसी दबाव

दिनांक २४ मार्च, १९६६ को सभी वृत्तपत्रों के एवं वृत्त-वितरक संस्थाओं के प्रतिनिधि श्री गुरुजी से मिलने आए थे। श्री लालबहादुर शास्त्री की असामयिक मृत्यु आदि विषयों पर बातचीत चल पड़ी। श्री गुरुजी ने कहा कि ''श्री शास्त्री जी को पत्र लिखकर मैंने सावधानी बरतने की प्रार्थना की थी। उन्होंने मुझे कहला भेजा था कि हाज़ीपीर आदि छोड़ेंगे नहीं। कश्मीर का प्रश्न भी बातचीत में नहीं आने दूँगा। डा. राधाकृष्णन जी ने भी कहा था कि हाज़ीपीर से हटने का प्रश्न पैदा नहीं होता है। सारी बातचीत का संक्षेप में इतना ही निष्कर्ष था कि हाज़ीपीर अपनी ओर रखेंगे और आज़ाद कश्मीर से सीधी सीमा रेखा तय कर वहाँ तक ही अपनी सेना पीछे हटाने को स्वीकृति देंगें, इसी मर्यादा में पाकिस्तान से समझौता होगा। परन्तु वैसा हुआ नहीं। रुसी नेताओं के दबाव में आकर शास्त्रीजी को झुकना पड़ा।''२

परिणामस्वरूप संशयास्पद रीति से उनका निधन हो गया।

सन १९७१ का भारत-पाक युद्ध

श्री गुरुजी को राष्ट्र पर आने वाली आपदाओं की पूर्व कल्पना हो जाती थी। पूछने पर वे कहते भी थे कि मातृभूमि के प्रति अनन्य भक्ति हृदय में धारण करने पर उस पर होने वाली सुख-दुःख की घटनाओं की अनुभूतियाँ सहज होने लगेंगी।

सम्भावित पाकिस्तानी आक्रमण

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ के केन्द्रीय कार्यकारी मण्डल ने दिनांक ११ जुलाई, १९७१ को पारित 'बांग्लादेश में पाकिस्तान का पिशाच-नृत्य' नामक प्रस्ताव में कहा था, ''बांग्लादेश से हिन्दुओं के समूलोच्छेद

का कार्य पाकिस्तान ने प्रारम्भ कर दिया है। इसके परिणामस्वरूप ७० लाख हिन्दू भारत आ चुके हैं और शीघ्र ही शेष हिन्दुओं के भी आ जाने की सम्भावना है।''३

---

१. आर्गेनाइज़र, १६.१.१९६६, पृष्ठ-१.
२. स्मृति पारिजात, भारतीय विचार साधना, नागपुर, पृष्ठ-१०८.
३. संकल्प, पृष्ठ १०४-१०५.

कार्यकारी मण्डल ने दिनांक १७ अक्तूबर, १९७१ को 'बांग्लादेश के प्रति भारत का कर्तव्य' नाम से पारित एक अन्य प्रस्ताव में कहा कि ''यदि पाकिस्तान भारत पर आक्रमण करने का दुस्साहस करता है तो शासन हिम्मत एवं दृढ़ता का परिचय देते हुए भारतीय सेना के विजिगीषु एवं पराक्रमी जवानों की सहायता से पाकिस्तान को ऐसा पाठ पढ़ाए कि फिर कभी ऐसी धृष्टता करने की उसकी शक्ति ही समाप्त हो जाए तथा बांग्लादेश की समस्या भी ठीक प्रकार हल होकर समस्त विस्थापित शांति एवं सम्मानपूर्वक अपने-अपने घरों को लौट सकें।''१

आपातकालीन कर्तव्य

दिनांक ३ दिसम्बर को युद्ध की घोषणा हो जाने पर, ४ दिसम्बर को नागपुर से श्री गुरुजी ने एक निवेदन प्रकाशित किया जिसमें कहा गया था, ''राष्ट्रहित सर्वोपरि है और व्यक्ति, दल आदि का विचार गौण है। इसलिए आज जब अपना राष्ट्र युद्ध स्थिति में घसीटा गया है, प्रत्येक स्वयंसेवक और संघप्रेमी व्यक्ति द्वारा व्यक्ति के नाते तथा संघ के नाते, देश की रक्षा के सभी कार्यों में सरकार को मनःपूर्वक सहायता किया जाना स्वाभाविक ही है।''२

इस निवेदन की लाखों प्रतियाँ स्वयंसेवकों ने घर घर पहुँचाईं और समाज सेवी संस्थाओं तथा व्यक्तियों के साथ सहकार्य करते हुए, वे राष्ट्ररक्षा के प्रयत्नों में जुट गए।

कर्तव्यपरायणता

पहले की भाँति इस युद्धकाल में भी स्वयंसेवकों ने समूचे राजस्थान, उत्तरी पंजाब, जम्मू, उत्तर प्रदेश, बिहार और बंगाल में अधिकरियों को अपनी सेवाएँ अर्पित कीं और हर प्रकार का नागरिक सहयोग जुटाया। उत्तर प्रदेश में तो जनजागरण का नियमित कार्यक्रम चलाया गया। लोगों को समझाया गया कि वे पाकिस्तान-समर्थक तत्त्वों और उनकी सम्भावित पंचमांगी गतिविधियों से सावधान रहें। दिल्ली में रेडियो कालोनी में प्रसारण तथा अन्य महत्त्वपूर्ण प्रतिष्ठानों तथा नज़ीराबाद के जलाशय की रक्षा के लिए किंग्जवे कैम्प पुलिस थाने के अधिकारियों ने स्वयंसेवकों की सेवाएँ प्राप्त कीं। दिनांक ७ दिसम्बर १९७१ को जब पाकिस्तानी विमानों ने राजस्थान के बाड़मेर रेलवे स्टेशन पर बम बरसाए तो ४०-४५ स्वयंसेवक तुरन्त उस खतरनाक स्थल पर पहुँचे। पेट्रोल के पीपों से लदी एक मालगाड़ी में आग लग सकती थी। स्वयंसेवकों ने

---

१. संकल्प, पृष्ठ-१०५.
२. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड १०, पृष्ठ २११-१२.

रुक-रुक कर हो रही बमबारी की परवाह न करते हुए पीपों को हटाकर सुरक्षित स्थान पर पहुँचा दिया।

स्मरणीय संस्मरण

पंजाब में पाकिस्तानी सीमा से सटे फाज़िल्का नगर पर अचानक आक्रमण हुआ व बम बरसाए गए। अधिकांश लोग हड़बड़ाकर सुरक्षित स्थानों को जाने लगे। ज़िलाधिकारी (कलेक्टर) तथा अन्य सरकारी अधिकारी भी उस स्थान को खाली कर जाने की तैयारी कर रहे थे। ज़िला संघचालक ने ज़िलाधिकारी को पंजाबी देशभक्ति गीत सुनाकर उत्साहित किया। एक घण्टे के अन्दर वहाँ कुमुक आ गई तथा नगर को बचा लिया गया।

बंगाल में संघ कार्यकर्ताओं द्वारा सूखे मेवे के १५००० पैकेट मेजर कौशल और जनरल अरोड़ा को सौंपे गए। जवानों को सम्बोधित हर पैकेट के अन्दर रखी एक मर्मस्पर्शी टिप्पणी में कहा गया था, ''जिस पाकिस्तानी सेना ने बांग्लादेश पर अमानवीय अत्याचार ढाए थे, उसे इतने अल्पकाल में हराकर आपने न केवल अपनी बेजोड़ वीरता का झंडा गाड़ दिया है, अपितु भारतीय सेना के शौर्य की पुरातन प्रेरणादायी परम्परा को भी आगे बढ़ाया है। समूचे राष्ट्र को आप पर अपार गर्व है।''[१]

वर्तमान संघर्ष की पृष्ठभूमि

विजयवाड़ा (आन्ध्र प्रदेश) के हेमन्त शिविर में दिनांक ७.१२.१९७१ के अपने उद्‌बोधन में श्री गुरुजी कहते हैं, ''वास्तविकता यह है कि बारह सौ वर्ष पूर्व सम्पूर्ण भारत को इस्लाम मतावलम्बी बनाने की आकाँक्षा लेकर, भारत को गुलाम बनाकर, उस पर सदैव अपना शासन प्रस्थापित रखने के लिए आक्रमण प्रारम्भ हुआ। वर्तमान काल के आक्रमण के पीछे भी वही आकाँक्षा है। १२०० वर्ष लम्बी आक्रमण की कथा का, यह एक अध्याय है। इस वस्तुस्थिति को समझ लेने से, इस संकट का ठीक-ठीक निराकरण करने की क्षमता हमें प्राप्त होगी।''[२]

देश का अनैसर्गिक विभाजन

दिनांक १६.१२.१९७१ को श्री गुरुजी से अनौपचारिक चर्चा के लिए पत्रकार बंगलौर में डा. नरसिंहाचार के निवासस्थान पर आ रहे थे। इसी बीच आकाशवाणी से घोषणा हुई कि बांग्ला देश में

---

१. कृतिरूप संघ दर्शन, पृष्ठ ३४-३६.
२. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड १०, पृष्ठ २१२-१५.

पाकिस्तानी सेना ने आत्मसमर्पण कर दिया है। चर्चा का प्रारम्भ करते हुए एक पत्रकार ने टिप्पणी की, कि श्री गुरुजी से मिलने के लिए उनके आगमन का आनन्ददायक संयोग, इस ऐतिहासिक घटना के साथ हुआ है। पत्रकारों के प्रश्नों का उत्तर देते हुए श्री गुरुजी ने कहा, ''देश का दो हिस्सों में विभाजित होना भी अनैसर्गिक ही था। हमें वह नहीं होने देना चाहिए था। परन्तु वह हुआ। अब उसका तीन हिस्सों में बँटना अवश्यम्भावी था। पाकिस्तान के ये दो हिस्से दीर्घकाल तक एक साथ नहीं रह सकते थे। विशेषतः गत दस बारह वर्षों में, इन हिस्सों में गहरी कटुता निर्माण हो गई थी। सच तो यह है कि २४ वर्षों की दीर्घ अवधि तक वे जैसे-तैसे एक साथ रह सके, यह अपने आप में आश्चर्य है।''[१]

शहीदों को श्रद्धांजलि

कोलकाता में दिनांक १.१.१९७२ को एक जनसभा को सम्बोधित करते हुए श्री गुरुजी ने कहा, ''सेना के जिन लोगों ने इस विजय की प्राप्ति के लिए प्राण अर्पण किए, उन सब लोगों की स्मृति में कृतज्ञता एवं श्रद्धाभाव से नतमस्तक होना और अन्तःकरण पूर्वक उनके प्रति श्रद्धांजलि अर्पित करना अपना कर्तव्य है। उनके बलिदान से न केवल देशरक्षा हो सकी, वरन् उन्होंने अपने देश का गौरव बढ़ाया। ऐसे

लोगों के प्रयत्नों से ही हमें विजय प्राप्त हुई और दुनिया में यह सिद्ध हो सका कि भारत सशक्त परन्तु शान्तिप्रिय देश है। इसीलिए स्वतन्त्रता और राष्ट्रसम्मान के लिए जब वह खड़ा हो जाता है, तब उसका सामर्थ्य विश्व में अजेय रहता है।''२

स्वर्णाक्षरों से अंकित करने योग्य घटना

बाँग्ला देश की मुक्ति के पश्चात् भारत के रक्षामन्त्री मान्यवर बाबू जगजीवनराम जी को दिनांक २२.१२.१९७१ को श्री गुरुजी लिखते हैं, ''रक्षामन्त्री के नाते आपके नेतृत्व में अपनी सेना के तीनों विभागों ने अभिनन्दनीय पराक्रम कर बाँग्ला देश मुक्त किया, वहाँ के लोगों को अपना जीवन स्वतन्त्रता से बनाने का आश्वासनयुक्त सुअवसर प्राप्त करा दिया, यह घटना स्वर्णाक्षरों से अंकित करने योग्य है।''३

भारत के गौरव में अभिवृद्धि

बाँग्ला देश की मुक्ति के पश्चात् प्रधानमन्त्री श्रीमती इंदिरा गाँधी और उनके मन्त्रिमण्डल का

---

१. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड १०, पृष्ठ २१७-२२.
२. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड १०, पृष्ठ २२३-२८.
३. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड ७, पृष्ठ १५०-५२.

अभिनन्दन, अपनी अजेय सैन्य शक्ति को अभिवादन, भारत की भावी नीति का दिशा बोध और गौरव भावनायुक्त राष्ट्र की एकात्म शक्ति सुदृढ़ करने में संघ सहयोग करेगा इस संकेत को प्रकट करते हुए श्रीमती गाँधी को, श्री गुरुजी दिनांक २२.१२.१९७१ को लिखते हैं, ''देश की एकात्मता, परिस्थिति का वास्तविक मूल्यांकन, राष्ट्र के स्वाभिमान तथा गौरव रक्षा का सार्थ संकल्प इसी प्रकार विद्यमान रहे। केवल संकटकाल में नहीं तो सदैव सब प्रकार की राष्ट्रोत्थान की चेष्टाओं में इसकी आवश्यकता है। अपने राष्ट्र की गौरव भावनायुक्त एकात्म शक्ति के निर्माण में रत राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ सदैव इसमें आपके साथ है और रहेगा। देश की प्रतिनिधि के रूप में आप इन सभी आवश्यकताओं को ध्यान में रखकर अपनी राष्ट्रीय तथा विदेश नीति निर्धारित करेंगी, ऐसा मुझे विश्वास है। आपके नेतृत्व में भारत के गौरव में इसी प्रकार अभिवृद्धि होती रहे।''१

श्रीमती इन्दिरा गाँधी ने दिनांक १३.०१.१९७२ को श्री गुरुजी को लिखा, ''आपका २२ दिसम्बर का पत्र मुझे श्री हंसराज गुप्ता द्वारा ६ जनवरी को प्राप्त हुआ। आपकी सद्भावना के लिए धन्यवाद।

देश के विजय में हमारी सेनाओं के साहस और शौर्य के साथ-साथ इस संकटकाल में राष्ट्र ने जो एकता दिखाई उसका भी विशेष हाथ रहा है। इस एकता को बनाए रखना राष्ट्र के हित में है, जबकि संकट अभी पूरी तरह समाप्त नहीं हुआ है।''२

विविधता में एकत्व का साक्षात्कार

दिनांक १८.०१.१९७२ को श्री गुरुजी उन्हें लिखते हैं, ''आपका दिनांक १३.०१.१९७२ का पत्र आज प्राप्त हुआ। बहुत आभारी हूँ। राष्ट्र में एकता का भाव सदैव बना रहे, यह सत्य है। सबने अपना दायित्व जानकर, समझकर इसलिये प्रयत्नशील रहना है।

भारत की जीवनधारा में विविधता में एकत्व का साक्षात्कार करना तथा व्यवहार करना है। सबको एक ही ढाँचे में ढालकर विविधता के सौन्दर्य की जीवमानता को नष्ट करना नहीं है। इसी तथ्य को ध्यान में रखकर सब चलें, यही कामना है।''३

१. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड ७, पृष्ठ १४६-५०.
२. ऑर्गेनाइज़र, १६.६.१९७३, पृष्ठ-६.
३. श्री गुरुजी समग्रः खण्ड ७, पृष्ठ-१५१.